

स्वानुभूतिप्रकाश

वीर संवत्-२५३५ : अंक-१६७ वर्ष - १५ : अगस्त-२०११

श्रावण सुद १२, मंगलवार ता. १५-०८-१९७८, बडेनश्रीना वयनामृत
१७७ उपर पूज्य गुरुदेवश्री कानज्जस्वामीनुं प्रवचन, प्रवचन-६५

चैतन्य की स्वानुभूतिरूप जिले लुअे नंदनवन में साधक आत्मा
आनन्दमय विहार करता है. बाहर आने पर कहीं रस नहीं
आता. १७७.

१७७ है. है न ? सूक्ष्म विषय है. 'चैतन्य की स्वानुभूतिरूप जिले लुअे
नंदनवन में साधक आत्मा आनन्दमय विहार करता है.' आडा..डा..! क्या
कहते हैं ? कि यह आत्मा अतीन्द्रिय आनंदस्वरूप है और अतीन्द्रिय ज्ञान
और शांति का पूर्ण स्वरूप है. इसका अनुभव करके... याहे तो दया, दान,
व्रत, भक्ति का विकल्प हो, वह कोई धर्म नहीं है और धर्म का कारण नहीं है.

मुमुक्षु :- परंपरा कारण है.

पूज्य गुरुदेवश्री :- परंपरा कारण है ही नहीं. परंपरा कारण कडा
है वह तो सम्यग्दर्शन हुआ, आत्म अनुभव हुआ, मैं निर्विकल्प आनंदस्वरूप
हूँ. ऐसा अनुभव हुआ तो वह जो अनुभूति वह मोक्ष का कारण है. तो
साथ में राग आया उसका आरोप करके, परंपरा यानी पीछे छोडकर स्थिरता
होगी इसलिये परंपरा (कडा है), सम्यग्दृष्टि को परंपरा कारण कडा है. अज्ञानी
(का) जो व्रत, भक्ति और पूजा (का) भाव है वह परंपरा कल्याण का कारण
है, वह बिलकुल जूठ है. सूक्ष्म बात है. आडा..डा..!

मुमुक्षु :- ...

पूज्य गुरुदेवश्री :- लोगा बापू ! अनंतकाल हुआ, भाई ! आडा..डा..! अरे...! प्रभु ! योराशी के
अवतारमें अेक-अेक योनी में अनंत अवतार किये, भाई ! आडा..डा..! उसमें से त्रसपना पाना उसे चिंतामणि
जैसा कडा. आडा..डा..! उस चीज में एतना दुःख भोगा, नरक भूमि गये... आडा..डा..! अेक क्षण के नरक



के दुःख, भगवान ! ऐसा इरमाते हैं कि एक क्षण के दुःख, कौड ज्वाल और कौड भव में भी नहीं कल सके, प्रभु ! आडा..डा..! अरे..! प्रभु !

आत्मा के आनंद स्वरूप से विरुद्ध दृष्टि के कारण... आडा..डा..! व्यवहार, दया, दान, व्रत, भक्ति से मेरा कल्याण होगा, वह मिथ्यात्वभाव है. उस मिथ्यात्वभाव के कारण नरक में अनंत बार गया, निगोद में अनंतबार गया, प्रभु ! आ..डा..! उस नरक के एक क्षण का दुःख, एक क्षण का... 'रत्नकरंड श्रावकाचार' में है और 'छल ढाला' में है. कौड ज्वाल से और कौड भव से... अरे..! प्रभु ! क्या है ? भाई ! आडा..डा..! अतीन्द्रिय आनंद प्रभु ! सख्यिदानंद स्वरूप, उसका दृष्टि में आश्रय लिया नहीं और पुण्यपाप के भाव में आश्रय लेकर मेरा हित होगा, जैसे मिथ्यात्वभाव का सेवन किया. उस मिथ्यात्व के कारण अनंतबार योनी में अवतरे और नरक का दुःख एक क्षण का... आडा..डा..! भाई ! तुने कभी विचार किया नहीं. आडा..डा..!

कौड ज्वाल और कौडों भव से एक क्षण के दुःख नहीं कल सकते. प्रभु ! तुम अनंतबार उउ सागर में गये. १० हजार वर्ष की नरक की स्थिति में अनंतबार गये. १० हजार और एक समय में अनंतबार गये. दो समय में अनंतबार गये. उउ सागर की स्थिति में अनंतबार गये, प्रभु ! उस दुःख का वेदन... आडा..डा..! तो तु एकबार सम्यग्दर्शन प्रगट कर. आडा..डा..! स्वानुभूति (कर). राग और पुण्य का अनुभव है वह कर्मचेतना, कर्मफलचेतना का अनुभव होता है वह मिथ्या अनुभव है. क्या कल ? जितने भी शुभभाव आदि, दया, दान, व्रत, भक्ति का हो, वह शुभभाव कर्मचेतना है. विकारभाव का चेतन उसमें में है. विकारभाव का वेदन है. आडा..डा..! समज में आया ?

साधकज्वाल को.... आडा..डा..! 'चैतन्य की स्वानुभूतिरूप...' भगवान अनंत गुण का पिंड प्रभु !

उसके सन्मुख होकर, निमित्त, राग और पर्याय कि रुचि से छूटकर त्रिकाली शायकभाव के आनंद के धाम कि रुचि करके अनुभव करना, उस अनुभूति में 'जिसे दुःखे नन्दनवनमें...' आडा..डा..! जैसे इस दुःख में अनंतकाल गया, जैसे भगवान आत्मा अपने आनंदस्वरूप का अनुभव करे. आडा..डा..! एक क्षण के आनंद में, अनुभूति में, 'नन्दनवनमें साधक आत्मा आनन्दमय विहार करता है.' आडा..डा..! ४१२ गाथा में कल है. 'समयसार' ४१२. 'तत्त्व' 'समयसार' ४१२ गाथा. आडा..डा..!

प्रभु ! तेरी यीज अंदर में आनंद का धाम (है). आडा..डा..! तेरी प्रभुता का पार नहीं प्रभु ! ऐसी अंतर शक्ति का सागर प्रभु ! उसके सन्मुख होकर अनुभूति करना, यही धर्म की पहली सीढ़ी, शरुआत है. उसके बिना भक्ति, पूजा, दान, व्रत और कौडो रूपों के दान दे और कौडो मंदिर बनाये, उसमें तो शुभभाव दुःखरूप है. आडा..डा..! 'चैतन्य की स्वानुभूति...' आडा..डा..! भगवान अनंत पवित्र स्वभाव से भरा पडा है. उसके सन्मुख होकर जब उसका अनुभव होता है, उसका नाम सम्यग्दृष्टि और सम्यग्ज्ञानी कलवाते हैं. बाकी सब व्यर्थ है. आडा..डा..!

मुमुक्षु :- सन्मुखता कैसे हो ?

पूज्य गुरुदेवश्री :- बाहर में लक्ष्य करते हैं, बाहर में लक्ष्य करते हैं कि नहीं ? आर्तध्यान और रौद्रध्यान करना आता है कि नहीं ?

मुमुक्षु :- ...

पूज्य गुरुदेवश्री :- ध्यान करना आता है कि नहीं ? पर का, राग का, पुण्य का ध्यान करना आता है कि नहीं ? तो जैसे राग का ध्यान करते हैं-आर्तध्यान, वह मिथ्यात्वभाव है, दुःखरूप है. आडा..डा..! जैसे अंतर में ध्यान का लगाना. बाहर का ध्यान करते हैं उसे अंदर में लगाना. बाह में आयेगा. सूक्ष्म बात है, प्रभु ! वर्तमान में तो मार्ग को विपरीत कर दिया है, भाई ! आडा..डा..! अंतर भगवान ! अंतर की

ज्ञान की पर्याय में उसका लक्ष्य करके, श्रद्धा की पर्याय में उसका आश्रय करके, जो अनुभूति होती है, उस आनंद के स्वाद के साथ ज्ञानचेतना प्रगट हुई. आडा..डा..!

‘नंदनवनमें...’ आडा..डा..! ‘साधक आत्मा...’ अपने स्वरूप का साधक सम्यग्दृष्टि जव... आडा..डा..! ‘आनंदमय विहार करता है.’ अतीन्द्रिय आनंद में वल विचरता है, याडे तो वल गृहस्थाश्रम में डो. आडा..डा..! लेकिन धर्मी और समकित्ती उसे कडे, जो अपने अतीन्द्रिय आनंद के अनुभव में विचरे. आडा..डा..! नंदनवन, आनंद का वन है अंदर. आडा..डा..! सारे अनंतगुण बाग में पडे हें, पील जाते हें. आडा..डा..! सूक्ष्म बात है, प्रभु ! लेकिन समजनी तो पडेगी न भाई ! ऐसा मनुष्यपना मिला और उसमें जैन में जन्म हुआ और जैन में वीतराग की वाणी सुनने मिली, प्रभु ! तो तुजे करना पडेगा. आडा..डा..! वरना तो बहुत बार अनंतबार, अक श्वास में अठारल भव निगोद (के किये). गजब बात है. क्या है यल ? सुनता है लेकिन विचार करे तो पता चले. अक निगोद के भव में, अक श्वास में... यल श्वास मनुष्य का श्वास, डां ! देव का श्वास तो पंद्रल दिन श्वास रुकता है. क्या कडा ? जो सागरोपमवाले देव हें, उन्डं पंद्रल दिन में श्वास आता है. वल बात नहीं. समज में आया ?

देव, जो पुण्य के इल में स्वर्ग मिले. अक सागर की स्थिति डो तो पंद्रल दिन में तो सांस लेते हें. श्वासोश्वास. श्वास और उच्छ्वास-दो डुअे न ? वल श्वास यडां नहीं लेना. यडां तो मनुष्य का जो श्वास-उच्छ्वास है, अक श्वासोश्वास में निगोद के अठारल भव किये, प्रभु ! लूल गया. लूल गया इसलिये नहीं है ऐसा कैसे कडे ? जन्म के बाद छल मास में माताने क्या पिलाया, कैसे नडलाया, मालूम है ? याद है ? याद नहीं है इसलिये नहीं था ? आडा..डा..! इसी भव में छ मास में जन्म के बाद क्या हुआ ? कैसे

रोया ? कैसे जाया ? कैसे पिया ? कैसे दूध पिलाया ? यल किया डुई है न ? याद है ? याद नहीं इसलिये नहीं थी ? ऐसा कोन कडे ? ऐसे पूर्व भव का याद नहीं है तो पूर्व भव में एतने दुःख सडन किये, वल नहीं है ? कोन ऐसा कडे ? समज में आया ? लोजिक से न्याय से समजना पडेगा. आडा..डा..!

कडते हें कि प्रभु ! अकबार सुनो तो सडी. तेरी प्रभुता अनंत एतनी पडी है कि अनंत... अनंत... अनंत... अनंत... शक्तियां हें और अक-अक शक्ति में अनंत-अनंत प्रभुता है. आडा..डा..! ऐसी अनंत प्रभुता का पिंड प्रभु तेरी यीज अंदर है, भगवान ! आडा..डा..! आचार्य तो भगवान कडकर बुलाते हें. आडा..डा..! उर गाथा. कर्ता-कर्म की. यडां लिया है. संस्कृत टीका है. पुण्य और पापभाव, शुभ और अशुभभाव अशुचि है, मैल है. दया, दान, व्रत, भक्ति, तीर्थयात्रा आदि के भाव, यल सब मैल है, शुभभाव मैल है. बाद में ‘अमृतयंद्राचार्य’ ने टीका में लिया है, भगवान आत्मा. ऐसा टीका में लिया है. आडा..डा..!

पुण्य और पाप के विकल्प, प्रभु ! यल राग है, दुःख है, आकुलता है, नाथ ! प्रभु ! तुम तो भगवान आत्मा. अशुचि के स्थान में वल शुचि-पवित्र है. आडा..डा..! शरीर अशुचि है वल बात यडां नहीं. ये तो मांस और डडी और यमडे का पुतला है. उसकी यडां बात नहीं. लेकिन अंदर में जो शुभ और अशुभभाव डोता है... आडा..डा..! वल अशुचि है, मलिन है. भगवान आत्मा पवित्र है. ऐसा संस्कृत टीका में आचार्य महाराज ‘अमृतयंद्राचार्य’ द्विगंबर संत. भगवान कडकर तो बुलाते हें, प्रभु ! समज में आया ? भगवान आत्मा तो निर्मलानंद है न प्रभु ! अक डोल.

दूसरा डोल-रागादिभाव है... आडा..डा..! वल जड है, अचेतन है. आडा..डा..! याडे तो दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा तप का भाव-विकल्प वल अजव है, जड है. क्यों ? कि, राग अपने को जानता नहीं और राग चैत्यन्यस्वरूप भगवान साथ में बिराजते

हैं, उसको जानता है. और राग पर द्वारा जानने में आता है, ज्ञान द्वारा जानने में आता है. उस कारण से राग अश्व और जड है. आडा..डा..! भगवान आत्मा चैतन्य विज्ञानघन है. उसके सामने ऐसा दिया. तीन बार दिया है. आडा..डा..! शुभभाव अचेतन जड है, प्रभु ! उससे आत्मा का कल्याण होगा, (ऐसी मान्यता) मछमिथ्यात्व का सेवन है, मछ पापंड श्रद्धा का सेवन है.

मुमुक्षु :- पुण्य से तो अरिहंतपद मिलता है.

पूज्य गुरुदेवश्री :- पुण्य से अरिहंतपद नहीं मिलता है. 'पुण्यफला अरहंता' जो कछा है, उसका अर्थ दूसरा है. टीका है उसमें उपर. वड तो उसको समवसरण मिले वड. समज में आया ? यहां है, देओ ! पाठ में. ४५ है न ? देओ उसमें 'पुण्यफला अरहंता' संस्कृत. 'तीर्थकृतां' तीर्थकर को 'पुण्यविपाकोऽकिंचित्करः' संस्कृत में पडला शब्द है. भगवान को पुण्य अकिंचित्कर है, क्यों कुछ नहीं करता उनको ? 'अकिंचित्करः इति एवं आख्याति' आडा..डा..! तो लोग ऐसा अर्थ करते हैं, 'पुण्यफला अरहंता' पुण्यमें से अरिहंतपद प्राप्त होता है. भिलकुल मिथ्याश्रद्धा, आज्ञान है.

यहां तो पुण्य का इल, उनकी वाणी, औदारिक शरीर आदि मिला वड पुण्य का इल है. वड उदयभाव है. यहां तो कछा है न 'तीर्थकृतां' 'तीर्थकर को' 'पुण्यविपाकोऽकिंचित्कर' अकिंचितकर डी है. 'पुण्यविपाकोऽकिंचित्कर एवेत्यवधारयिति' आडा..डा..! 'प्रवचनसार' है. समज में आया ? आगमका तो यड वाक्य है. तो ऐसा कछते हैं 'पुण्यफला अरहंता' पुण्यके इल में अरिहंतपद मिलता है. अरे..! प्रभु ! ऐसा है नहीं. पुण्य तो राग है. उसके इल में वीतरागता सर्वज्ञ होता है ? आडा..डा..!

राग से रहित... (प्रवचनसार की) १६ वीं गाथा में कछा है, स्वयंभू-अपना आत्मा जब केवलज्ञान पाता है तो अपने शुद्धउपयोग से पाता है. समज में आया ? 'स्वयंभू' १६ वीं गाथा है. १५-१६ गाथा. 'स्वयंभू'.

अपनी केवलज्ञान की पर्याय अपने से कर्ता-कर्म (से दुई) है. पूर्व की पर्याय से भी केवलज्ञान हुआ नहीं. आडा..डा..! केवलज्ञान की ओक समय की पर्याय षट्कारक से परिणामन छोकर अपने से उत्पन्न होती है. आडा..डा..! वड पुण्य से उत्पन्न होती है, यड बात तीनकाल में है नहीं. पुण्य से तो नहीं, लेकिन पूर्व की मोक्षमार्ग की पर्याय है, उससे भी केवलज्ञान उत्पन्न होता है ऐसा भी नहीं. क्यों ? कि, मोक्षमार्ग की पर्याय है वड तो व्यय होती है, और केवलज्ञान की तो उत्पत्ति होती है. तो व्यय से उत्पत्ति होती है ? आडा..डा..! समज में आया ?

वड तो षट्कारक के परिणामन से (उत्पन्न दुई) है. १६ वीं गाथा में है. केवलज्ञान तो कर्ता पर्याय, कर्म पर्याय, साधन पर्याय, संप्रदान पर्याय, अपादान पर्याय, अधिकरण पर्याय. पर्याय के षट्कारक से उत्पन्न होती है. द्रव्य-गुण के आश्रय से भी नहीं. आडा..डा..! सत्. सत्... भगवान केवलज्ञान सत् पर्याय प्राप्त होती है. केवलज्ञान, मोक्षदशा यड अपनी पर्याय में षट्कारक के परिणामन से उत्पन्न होती है. आडा..डा..! पूर्व की पर्याय से नहीं, पुण्य से नहीं, निमित्त से नहीं, संघयण मज्जुत आया तो उससे नहीं. ऐसा स्वरूप है, भाई ! उसने कभी सुना नहीं. लोजिक से, न्याय से क्या चीज है ? समज में आया ? भगवान का मार्ग ... न्याय मार्ग है. तो न्याय से वस्तु की सिद्धि करते हैं. अन्याय और कुन्याय से सिद्धि करने जायेगा तो तुजे मिथ्यात्व होगा. आडा..डा..! समज में आया ?

यहां कछते हैं, ७२ गाथा के दो बोल आये. (रागादि) अशुचि (है), भगवान निर्भवानंद (है). राग अचेतन, भगवान चैतन्यस्वरूप. राग दुःखरूप, भगवान आनंदरूप. आडा..डा..! तीन बोल हैं. ७२ गाथा. शुभराग दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा का, दान का, करोड़ों रूपये का दान का भाव, राग मंद किया हो तो पुण्य है. दुःख है. आडा..डा..! कभी सुना नहीं. जैसे डी डम धर्म करते हैं (मान लिया था). धूल में

भी धर्म नहीं. धूल में नहीं, उसका अर्थ क्या ? कि जो सम्यग्दृष्टि को पुण्यानुबंधी पुण्य बंधता है, ऐसा मिथ्यादृष्टि को नहीं बंधता है. उसको तो पापानुबंधी पुण्य बंधता है. आडा..डा..! समज में आया ?

राग को दुःख कडा और भगवान आनंद स्वरूप है. वहां तो ऐसा विया है कि दुःख का कारण आत्मा की पर्याय नहीं और राग का कार्य आत्मा की पर्याय नहीं. अकारणकार्य शक्ति वहां से निकाली है ? ४७ शक्ति निकाली है. पडवी ज्वतरशक्ति है. 'जीवो चरित्तदसणणाणटिदो' दूसरी गाथा. पडवे शब्दमें से ज्वतरशक्ति निकाली है. आडा..डा..! अकार्यकारणशक्ति ७२ गाथा की टीका में विया है कि, भगवान आत्मा की आनंदरूप जो दशा है वड कोई राग का कार्य नहीं. आडा..डा..! और राग का वड कारण भी नहीं. आडा..डा..! समज में आया ? उसकी निर्मणानंद पर्याय का कर्ता-करण आदि उसकी पर्याय तो स्वतंत्र है. आडा..डा..! उसे ऐसा कडना कि, पुण्य के फल में अरिहंतपद प्राप्त है, प्रभु ! गजब करते हैं. आडा..डा..!

मुमुक्षु :- परसन्मुख होता है तब तो पुण्य होता है...

पूज्य गुरुदेवश्री :- राग की दिशा पर की ओर है. राग की दशा-दिशा पर की ओर है. सुनो ! याडे तो शुभराग हो, वड राग की दशा, उसकी दिशा पर की ओर है. और वीतराग पर्याय दशा, उसकी दिशा द्रव्य पर है. समज में आया ? याडे तो तीर्थकरगोत्र का भाव हो. वड राग है और राग की दिशा पर की ओर है. आडा..डा..! और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र जो वीतरागी पर्याय है, वड दशा, उसकी दिशा द्रव्य के उपर है. आडा..डा..! दशा की दिशा. राग की दशा की दिशा.

'भोक्षपाडुड' में १६ वीं गाथा में 'कुंदकुंदाचार्य' ने तो वहां तक कडा, 'परदव्वादो दुग्गई' आडा..डा..! गजब बात कडी. 'कुंदकुंदाचार्य' और भगवान ऐसा कडे कि, डम तुम्हारी अपेक्षा से परद्रव्य डी है. और

डमारे पर तेरा लक्ष्य जायेगा तो तेरी चैतन्य की गति की दृग्गति होगी. १६ वीं गाथा. आडा..डा..! लोगों को तत्त्व का पता डि नहीं. ऐसे डी मूंड छोकर यडे जाते है. ऐसा डिया, वैसा डिया.

मुमुक्षु :- दृग्गति का अर्थ समजार्थे.

पूज्य गुरुदेवश्री :- दृग्गति का अर्थ यड नहीं. चैतन्य कि परिणति से विपरीत वड दृग्गति. १६ वीं गाथा है. 'परदव्वादो दुग्गई' 'कुंदकुंदाचार्य' ऐसा कडते हैं, डमको मानने में तेरा जो भाव होता है वड राग है. यड दृग्गति नाम चैतन्य कि परिणति नहीं. आडा..डा..! मार्ग दूसरा है, भाई ! आ..डा..! लोगों का बाडर में भी ठिकाना नहीं. और मान जहां हो वहां अभिमान (करते हैं), मैंने डिया.. मैंने डिया.. मुझे मान मिला. अभिनंदन मुझे मिला. पाप है वहां. पुण्य का भी कहां ठिकाना है ? समज में आया ? यहां तो पुण्यभाव हो तो वड दृग्गति नाम चैतन्यकी परिणति नहीं. वड विकार गति है तो चैतन्यकी दृग्गति नाम विपरित गति-परिणाम है. आडा..डा..!

'सदव्वादो हु सुग्गई' ऐसा शब्द है वहां. भगवान ! यड अनुभूति. स्वद्रव्य भगवान पूर्णस्वरूप उसका लक्ष्य करके जो अनुभूति दुई वड 'सदव्वादो हु सुग्गई' यड चैतन्य की सुगति है. यड चैतन्य की परिणति सुगति है. और उसका फल भी सिद्ध नाम सुगति है. सिद्ध सुगति है और चार गति है वड दृग्गति है. आडा..डा..! समज में आया ? सभ कडते हैं डम को मालूम है.

अभी तो 'जैनदर्शन' में अक लेख ऐसा आया है कि चौथे, पांचवें, छडे तो शुभयोग डी होता है. और १२ वीं गाथा में आया न ? 'सुद्धो सुद्धादेसो णादव्वो परमभावदरिसीहिं। ववहारदेसिदा पुण जे दु अपरमे द्विदा भावे' इसका अर्थ विपरीत डिया कि जो परमभाव में स्थित है, सर्वज्ञ है उनको अब नय नहीं. लेकिन नय-शुद्धनय कहां तक है ? सातवें से बारडवें तक. चौथे से छडे तक शुभ है. सातवें से बारडवें

तक शुद्धउपयोग है. और केवल में शुद्धोपयोग का इल है. 'प्रवचनसार' की गाथा है. उसमें कडा है कि, संस्कृत टीका है, उपयोग की अपेक्षा से लेते हैं तो पडले गुणस्थान, दूसरे गुणस्थान, तीसरे गुणस्थान में अशुभ उपयोग हैं. और छठवें से बारहवें तक... आडा..डा..! समज में आया ? यौथे से बारहवें तक... यौथे, पांयवे, छडवे तक शुभउपयोग है. और सातवें से बारहवें में शुद्धउपयोग है. वड तो मुप्यता से भात की है. आडा..डा..!

बाकी तो 'द्रव्यसंग्रह' की ४७ गाथा है. ४७ कडते हैं न ? यार और सात. 'दुविहं पि मोक्खहेउं ज्ञाणे पाउणदि जं मु णियमा।' ऐसा पाठ है. 'दुविहं पि मोक्खहेउं' दो प्रकार का मोक्षमार्ग ध्यान में प्राप्त होता है. उसका अर्थ क्या ? कि अपना चैतन्यमूर्ति जो अंतर आनंद स्वरूप भगवान, उसकी अनुभूति करके अंदर जो दशा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-यारित्र लुआ, वड निश्चयमोक्षमार्ग है. वड ध्यान में आता है. अंतरस्वरूप का दृष्टि डो वड ध्यान में आता है. तो ध्यान है वडां शुद्धोपयोग है. शुभउपयोग नहीं. आडा..डा..! समज में आया ? और त्रिकावी भगवान के ध्यान में जो शांति, श्रद्धा, ज्ञान, यारित्र लुआ वड निश्चयमोक्षमार्ग है. साथ में राग रडा उसकी उपचार से व्यवहारमार्ग कडा. अभी तो ध्यान है तो भी ऐसा कडा. आडा..डा..! समज में आया ?

यडां तो कडते हैं कि व्यवहार है, पुण्यइल से अरिहंतपद प्राप्त होता है, प्रभु ! वड दृष्टि बिलकुल विपरीत है. अंदर उपर लिभा है कि, अकिंचितकर है. तीर्थकर को पुण्य अकिंचित्-कुछ भी करते नहीं. पुण्यइल तो देड, वाणी, यलना, डिलना वड उसका पुण्यइल है. और वड पुण्यइल भी समय-समय पर नाश होता है तो उदयका क्षायिकभाव कड दिया है. ४५ गाथा हैं. समज में आया ? जैसे नीचे के गुणस्थान में अपने स्वरूप में ध्यान में है. आनंद और ध्यान में (है), उदय आया तो वड उदय भीर जाते हैं, आया

वड भीर जाते हैं. अंदर आनंद में है तो उदय भीर जाता है. वडां जैसे भीर जाता है, वैसे केवली को जो बोलने आदि का कर्म का उदय आया वड उदय समय-समय में आया वड भीर जाते हैं. भीर जाता है तो उसको क्षायिकभाव कड दिया है. आडा..डा..! अभी तो मार्ग का सख्या ज्ञान व्यवहार से भी सख्या नहीं, उसको सम्यग्दर्शन और अनुभूति कडां से डोगी ? आडा..डा..! समज में आया ?

आनंदवन में विडार करता है. 'बाडर आने पर कडीं रस नहीं आता.' आडा..डा..! आत्मा में सम्यग्दर्शन और सम्यक्ज्ञान लुआ, तो उसमें आनंद में विरते हैं. बाडर जडां विकल्प आया, उसमें रस नहीं. आडा..डा..! बाडर आने पर कडीं रस नहीं. शुभभाव आया, होता है, ज्ञानी को भी शुभभाव आता है लेकिन रस नहीं (आता). आडा..डा..! समज में आया ? वड पुस्तक तो अब यालीस डजार, पयास डजार बाडर आ गये हैं. बडोत पुस्तक ... आडा..डा..! देभा है कि नहीं ? वयनामृत पुस्तक आया कि नहीं ? आया ? पडा है ? पडा नहीं. आडा..डा..!

यडां कडते हैं... आडा..डा..! स्वरूप का आनंद का अनुभव सम्यग्दर्शन में लुआ, अनुभूति जडां लुई, धर्म की प्रथम दशा जडां प्रगट लुई, उसको बाडर आने में, राग में दुःख लगता है. 'रस नहीं आता.' बाडर में डिजे. इन्द्र भी भगवान की लक्ति करे. क्या कडते हैं ? नंदीचर द्विप, नंदीचर द्वीप है न शाश्वत ? प्रतिभा शाश्वत है. वडां अष्टाद्विका में इन्द्रों जाते हैं. नाये. डिजे ऐसा. बाडर में उत्साह डिभता है. समकित्ती हैं, ज्ञानी हैं, पडले देवलोक का इन्द्र. पैर में घुंघरुं बांधकर भगवान के सामने नाये, उत्साह डिजे. लेकिन उस शुभभाव में रस है नहीं. आडा..डा..!

मुमुक्षु :- नायने में तो आनंद आता डोगा.

पूज्य गुरुदेवश्री :- कडा न, नायने कि किया तो जड की है. जो राग आया वड विकार है, दुःख है. आडा..डा..! कठिन भात, भाई ! बाडर में तो ऐसा

હી દિખે. ભગવાન કી સ્તુતિ કરે તો ઉત્સાહ દિખે, લેકિન અંદર મેં (રસ નહીં). કલ કહા થા, ૧૪૩ ગાથા હૈ 'સમયસાર', સમ્યગ્દષ્ટિ જ્ઞાન કી ક્ષયોપશમ દશા હૈ, અલ્પદશા હૈ તો વિકલ્પ આતા હૈ. લેકિન વિકલ્પ સે ઉત્સાહ કી નિવૃત્તિ હૈ. ઉસમેં રસ નહીં. આહા..હા..! બહુત સૂક્ષ્મ બાત, બાપૂ ! માર્ગ અલૌકિક હૈ. આહા..હા..! ઔર જૈનદર્શન કે અલાવા યહ ચીજ કહીં પર ભી નહીં. ઔર વહ જૈનદર્શન, એક દિગંબરદર્શન હૈ વહ જૈનદર્શન હૈ. બાકી ઔર કહીં નહીં હૈ. અરે..રે..! કયા હો ? પક્ષમેં આકર લોગ સત્ય કો અસત્ય કર દે, એસા નહીં હોગા. વસ્તુ તો વસ્તુરૂપ રહેગી. આહા..હા..! અન્યથા કરેગા તો ઉસકી દષ્ટિમેં અન્યથા હોગી. વસ્તુમેં અન્યથા નહીં હોગી, વસ્તુ તો વસ્તુ હૈ. આહા..હા..! યહાં કહતે હૈં, જ્ઞાની બાહર નીકલે ફિર ભી રસ નહીં આતા. શુભભાવ આતા હૈ. આહા..હા..! 'ભરતેશ વૈભવ' મેં એક લેખ હૈ. 'ભરતેશ વૈભવ' હૈ ન ? ભરત'

ચકવર્તી ક્ષાયિક સમકિતી થા. ઔર રાગ અશુભ આયા. ભોગ કે કાલ મેં અશુભરાગ હુઆ. ક્રિયા તો જડ કી હોતી હૈ. આહા..હા..! લેકિન જબ અશુભ આયા તો દુઃખ લગતા હૈ ઔર જહાં ભોગ પૂરા હુઆ ઔર નીચે બૈઠતે હૈં (તો) નિર્વિકલ્પ ધ્યાન હો જાતા હૈ. 'ભરતેશ વૈભવ'મેં હૈ. ધર્મીજીવ કો અશુભરાગ, ભોગ કી વાસના આયી. લેકિન દુઃખ (લગતા હૈ). જહાં (રાગ) પૂરા હુઆ, વહાં દૂસરે ક્ષણ મેં નિર્વિકલ્પ આનંદ ધ્યાન હો ગયા. આહા..હા..! ક્યોંકિ લગની વહાં હૈ. બાપૂ ! માર્ગ કોઈ અલગ જાત કા હૈ, ભાઈ ! આહા..હા..! જહાં આત્મા કા નિર્વિકલ્પ સમ્યગ્દર્શન અનુભવ હુઆ, ઉસકો રાગ આયા (લેકિન) રસ નહીં આયા. ઔર રાગ છૂટકર એક ક્ષણ મેં, દૂસરે ક્ષણમેં ધ્યાન મેં આ જાતા હૈ. એસી ચીજ હૈ. આહા..હા..! સમજ મેં આયા ? ઉસ રાગ મેં રસ નહીં. ૧૭૭ (બોલ પૂરા) હુઆ.

(પૂજ્ય ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામીના ઉદ્દગારો)

અનુભવી, સમકિતી, આત્મજ્ઞાની છે. આત્માનો અનુભવ તો છે પણ સાથે અસંખ્ય અબજ વર્ષોનું જાતિસ્મરણજ્ઞાન છે. પણ લોકોને બેસવું કઠણ પડે.



બેનને તો એક આનંદ આનંદ આનંદ ! ને આખો દી સહજ નિવૃત્તિ; બસ, બાકી કાંઈ કરતાં કાંઈ નહિ. કોઈ વંદન કરે કે નહિ એની સામે પણ જુએ નહિ. કોઈ સાથે લવથવ નહિ.

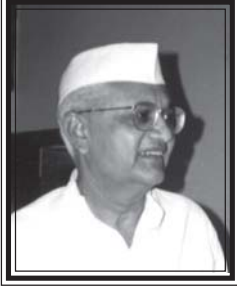


તા.૨૯-૧-૭૮

જેને આનંદમાં જમવટ જામી છે, જેને અતીન્દ્રિય આનંદના કોળિયા લેવાય છે અને જે અતીન્દ્રિય આનંદને ગટક ગટક પીએ છે એવા ધર્મીનું (—સાધકનું) આ સ્વરૂપ બેનના મુખેથી (વચનામૃતમાં) આવ્યું છે. તદ્દન સાદી ભાષા. પ્રભુના સમવોસરણમાં આમ વાત ચાલતી, ભાઈ !...અરે ! આ વાત બેસે તે તો ન્યાલ થઈ જાય તેવું છે. જિનેશ્વરદેવનું જે ફરમાન છે તે આ બેન કહી રહ્યાં છે.



ટ્રસ્ટના 'સ્વાનુભૂતિપ્રકાશ'ના આ ગુજરાતી અંક (ઓગસ્ટ-૨૦૧૧નું) શુલ્ક શ્રી ધમેન્દ્રભાઈ ન્યાલચંદ વોરાના નામથી સાભાર પ્રાપ્ત થયું છે, જેના કારણે આ અંક બધા પાઠકોને મોકલવામાં આવ્યો છે.



બહેનશ્રીના વચનામૃત, બોલ ૯૦-૯૧ ઉપર
પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનું પ્રવચન,
પ્રવચન નં. ૭૪ (તા.૧૯-૪-૧૯૮૭)

સંસાર કી અનેક અભિલાષારૂપ ક્ષુધા સે દુઃખિત મુસાફિર ! તૂ વિષયોં કે લિયે ક્યોં તરસતા હૈ ? વહાં તેરી ભૂખ શાંત નહીં હોગી. અંતર મેં અમૃતફલોં કા ચૈતન્યવૃક્ષ લગા હૈ ઉસે દેખ તો અનેક પ્રકાર કે મધુર ફલ એવં રસ તુઝે પ્રાપ્ત હોંગે, તૂ તૃપ્ત-તૃપ્ત હો જાયગા. ૯૦.

આગે કહતે હૈં કિ, 'સંસાર કી અનેક અભિલાષારૂપ ક્ષુધા સે દુઃખિત મુસાફિર !' જીવ કો મુસાફિર કહા હૈ. વહ મુસાફરી કરતે હી રહતા હૈ. ચારોં ગતિયોં મેં ઔર તીન લોક મેં - ઊર્ધ્વલોક, મધ્યલોક, અધોલોક મેં બહુત લંબી મુસાફરી કરતા હૈ - લંબી Travelling કરતા હૈ. યહાં તો હજાર-દો હજાર મીલ કી યા દસ-બીસ હજાર મીલ કી આદમી મુસાફરી કર સકતા હૈ. દુનિયા કા છોડા આ જાતા હૈ. લેકિન અસંખ્ય યોજન મેં જાતા હૈ. કભી કહાં, કભી નિગોદ મેં, કભી ઉપર, કભી નીચે, કભી મધ્ય મેં કહાં કા કહાં (જાતા હૈ). ક્યોં ? કિ, સંસાર કી અનેક અભિલાષારૂપ ક્ષુધા સે વહ દુઃખિત હૈ. યહ ચાહિયે, વહ ચાહિયે, સંસાર કા યહ પદાર્થ ચાહિયે, સંસાર કા વહ પદાર્થ ચાહિયે. ઉપયોગ ભ્રમણ કરતા હૈ, ભાવ ઉસકા ભ્રમણ કરતા હૈ. ભાવભ્રમણ કા ફલ મિલતા હૈ દ્રવ્યભ્રમણ. ભાવભ્રમણ કા ફલ ક્યા મિલતા હૈ ? દ્રવ્યભ્રમણ.

'ઘોઘા' મેં વહ દેખા થા ન ? ચોમાસે મેં બત્તી કે જો જીવ હૈં - Road light ! ઇતની તેજી સે ઘૂમતે હૈં કિ, જો કીડા હૈ, વહ પંખવાલા કીડા હોતા હૈ, ઉસ એક પંખવાલે પર નજર નહીં રખ સકે. ઇતની તેજી સે વહ ઘૂમતા હૈ. ક્યોં ઇતની તેજી સે (ઘૂમતા હૈ) ? કિ, ઉતની હી તેજી સે ઉસને ભાવ ઘુમાયા હૈ. ઉપયોગ

કી ચંચલતા ! યહ રૂપ કા આકર્ષણ હૈ. રૂપ કો દેખને મેં ઇતની તેજી સે ઉપયોગ ઘુમાયા હૈ ફિર વહ પ્રકાશ કા કીડા બનતા હૈ. પ્રકાશ કો દેખકર ઝપટ લગાતા હૈ, જોર-જોર સે ઝપટ લગાતા હૈ. કહાં તક લગાતા હૈ ? મરતા નહીં હૈ વહાં તક. સુબહ-સુબહ દેખો તો હજારો, સેંકડો-હજારો નીચે ગિરે હુએ દિખને મેં આતે હૈં. ઇસ ભાવભ્રમણ કા ફલ હૈ દ્રવ્યભ્રમણ.

સંસાર કે પદાર્થ કી - અનેક પદાર્થ કી અભિલાષારૂપ ભૂખ હૈ, એક અભિલાષારૂપ અગ્નિ હૈ. ક્ષુધા મેં અગ્નિ હૈ ન ? ઉસે જઠરાગ્નિ બોલતે હૈં. યહ ભી એક અગ્નિ હૈ જિસકા દાહ હોતા હૈ. શાંતસ્વરૂપ જીવ કો દાહ હોતા હૈ. 'રાગ આગ દહે સદા, તાતૈ સમામૃત સેઈએ' જીવ કો દાહ હોતા હૈ. જૈસે ક્ષુધા કા દાહ હોતા હૈ વૈસે રાગ કા દાહ હોતા હૈ.

'સંસાર કી અનેક અભિલાષારૂપ ક્ષુધા સે દુઃખિત મુસાફિર ! તૂ વિષયોં કે લિયે ક્યોં તરસતા હૈ ?' જ્ઞાની યહ પ્રશ્ન પૂછતે હૈં. વિષયોં કે લિયે તૂ તરસતા હૈ જૈસે કિસીકો પ્યાસ લગતી હૈ ઔર પાની કે લિયે છટપટાહટ ચલતી હૈ. પાની નહીં મિલે તો વહ તડપતા હૈ. વૈસે બાલ્ય પદાર્થ નહીં મિલતા હૈ તો વહ ઝપટ કરતા હૈ, ઝાંવા નાખતા હૈ. અનેક પ્રકાર કી પ્રતિકૂલતાઓં કો ગૌણ કરકે ઇચ્છિત પદાર્થ કો,

અભિલાષિત પદાર્થ કો પાને કે લિયે જીવ તરસતા હૈ. ઉસકો સત્પુરુષ પૂછતે હૈં કિ, તૂ ક્યોં તરસતા હૈ ?

‘વહાં તેરી ભૂખ શાંત નહીં હોગી.’ ઇસલિયે પ્રશ્ન પૂછા કિ, તૂ તરસતા હૈ, ચેષ્ટા કરતા હૈ, પ્રયાસ કરતા હૈ લેકિન તેરી ભૂખ તો શાંત હોનેવાલી નહીં હૈ. જિસ પ્રયાસ સે તુજે શાંતિ નહીં મિલેગી. ઐસા ઉલટા પ્રયાસ તૂ ક્યોં કરતા હૈ ? તો યહી કહતે હૈં કિ, હમ ઇચ્છિત પદાર્થ કો જૂટા લેતે હૈં. જૂટા લેતે હૈં માને પા લેતે હૈં તો હમકો ઠીક લગતા હૈ. ફિર ભી વહાં યહ ભૂખ શાંત નહીં હોતી. યહ એક ઐસી ભૂખ હૈ કિ જેસે અગ્નિ મેં કોઈ ઘી ડાલતા હૈ તો (અગ્નિ) અધિક તેજ હો જાતી હૈ. વૈસે યહ ક્ષુધા અધિક તેજ હોતી હૈ.

એક ક્ષુધા તો Temporary શાંત હો જાતી હૈ. જઠરાગ્નિવાલી જો ક્ષુધા હૈ ઉસમેં કુછ રોટી, દાલ, ભાત ડાલ દેતે હૈં તો થોડી દેર - ચાર, છઃ ઘંટે કે લિયે શાંત હો જાતી હૈ. લેકિન યહ તો શાંત હોતી હી નહીં. યહ તો એક વિકલ્પ શાંત હુઆ કિ દૂસરા વિકલ્પ ચલ ગયા, પૈદા હો ગયા. ઇસકો શાંતિ સે ભોગા નહીં ભોગા, દૂસરે પદાર્થ કી અભિલાષા ખડી હો જાતી હૈ ઐર વહ અશાંતિ બઢતી જાતી હૈ.

યહાં તો બાત દૂસરી બતાની હૈ કિ, બાહ્ય પદાર્થ કી અનાદિ સે તુજે અભિલાષા હુઈ. બાહ્ય પદાર્થ કી અભિલાષા-અગ્નિ સે તુજે અશાંતિ હો રહી હૈ. અબ, ઇસકી શાંતિ કે લિયે એક રાસ્તા હૈ, એક ઉપાય હૈ, એક માર્ગ હૈ - યહ બાત યહાં કરની હૈ.

‘અંતર મેં અમૃતફલોં કા ચૈતન્યવૃક્ષ લગા હૈ...’ યહ એક પૂજ્ય ‘બહિનશ્રી’ કી વિશિષ્ટતા હૈ કિ, આત્મા કે સ્વરૂપ કે વિષય મેં બહુત સે મીઠે શબ્દોં સે ઇસ વિષય કો વ્યક્ત કર સકતે હૈં. કહતે હૈં કિ, તુજે બાહર કે ફલોં સે યા બાહર કે વિષયોં સે તેરી વિષય કી ભૂખ શાંત નહીં હોગી, બઢતી જાયેગી. શાંત તો નહીં હોગી વરન બઢતી જાયેગી. ઐર ઇસે શાંત કરને કા એકમાત્ર ઉપાય હૈ કિ, આત્મા મેં જો આનંદ-અમૃત હૈ ઉસકા ભોજન લેને સે (તૃપ્તિ હોગી). ઇધર તો

ચૈતન્યવૃક્ષ, અમૃત કે ફલોં કે વૃક્ષ કી ઉપમા દી હૈ.

જૈસે આમ કા પેડ હોતા હૈ. અચ્છી-અચ્છી બઢિયા Quality કે આમ બનતે હૈં. ખાતે વક્ત બોલતે હૈં કિ, આ...હા...! યહ તો અમૃત જૈસા આમ હૈ ! ઉસકા આનંદ લેને મેં તો દુઃખ હૈ. યે માનતે હૈં ભલે સુખ, લેકિન સુખ હૈ નહીં. અસલ મેં વહાં ભી આકુલતા હી હોતી હૈ. યહ ઇચ્છા કી જો અગ્નિ હૈ ઉસે શાંત કરને કે લિયે આનંદ કી વર્ષા - અંતર આનંદ કી વર્ષા એક હી સમર્થ હૈ. વહાં તક કભી શાંતિ નહીં હોતી. કિસી કો કભી ત્રીન કાલ મેં શાંતિ નહીં હોતી.

ઇસકે પીછે યહ અભિપ્રાય હૈ કિ, જીવ કો સ્વયં કે લિયે ઐસા વિચાર કરના ચાહિયે કિ, મુજે તો અશાંતિ હો હી રહી હૈ. અબ, જહાં તક મેં મેરે આનંદ કા અનુભવ નહીં કરુંગા, અંતર આનંદ કા અનુભવ નહીં કરુંગા વહાં તક યહ અશાંતિ કી અગ્નિ કભી શાંત નહીં હોગી. ઐર ઐસી અશાંતિ કહાં તક ભોગની હૈ ? ઇસકા વિચાર કર લેના ચાહિયે. અનંત કાલ ગયા, અભી ભી જહાં તક નહીં સમજે, જહાં તક અંતર્મુખ નહીં હોવે (તબ તક) કિસકો માલૂમ (ઐર) કિતના અનંત કાલ જાયેગા ? કિતના અનંત કાલ જાયેગા ? અનંત કાલ મેં ભી કિતના અનંત કાલ જાયેગા કિસકો માલૂમ ? ઇસકા દુઃખ લગા હો, અરે...! ઇસકા દુઃખ જ્ઞાન મેં ભાસિત હોતા હો, સમજ મેં ભાસિત હોતા હો તો સહી રાસ્તે કો ઢૂંઢે ઐર સહી ઉપાય કરે. એક હી બાત હૈ.

પ્રશ્ન :- કયા ઉપાય હૈ ?

સમાધાન :- યહ તો કહતે હૈં. ‘અંતર મેં અમૃતફલોં કા ચૈતન્યવૃક્ષ લગા હૈ...’ તુજે ઇસ વૃક્ષ કો લગાના નહીં હૈ, લગા હુઆ હૈ.

મુમુક્ષુ :- દિખતા તો નહીં હૈ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- દેખતા નહીં હૈ તો દિખતા નહીં હૈ. એક ચીજ હૈ તો દેખનેવાલે કહતે હૈં કિ, હૈ. એક આદમી કહતા હૈ કિ, નહીં દિખતા હૈ. તો કહતે હૈં કિ, તૂ દેખતા નહીં હૈ (ઇસલિયે) નહીં દિખતા

હે. હમકો ક્યો દિખતા હે ? કિ, હે ઇસલિયે દિખતા હે. બસ ! ઇતની સી બાત હે. દેખને કે લિયે જિતના પ્રયત્ન (હોના ચાલિયે ઉતના કરતા નહીં). યે લડકે કો દેખો. અભી તો ત્રીન-ચાર સાલ કા હોતા હે (તો) ઉસે કે.જી. મેં, કીડાંગણ મેં, બાલમંદિર મેં ભેજતે હેં વહાં સે લેકર કે સ્કૂલ મેં જાતા હે, ફિર કોલેજ મેં જાતા હે, ફિર વહ Graduate હોતા હે તો વહ Clerk કે કાબિલ હોતા હે. Clerk કા કામ કર સકે ઇતની કાર્યક્ષમતા (પ્રાપ્ત કરતા હે). અભી જો Under graduate હે, Bachelor હોતા હે ઉસકી કક્ષા હે, ઇસકી યોગ્યતા હે. ઓર ઇસસે આગે બઢે (તો) કિતને સાલ જાતે હેં ? કોઈ અઠારહ-બીસ સાલ મેં હોતા હે તો પંદ્રહ સાલ હો ગયે. ઉસસે આગે બઢને કે લિયે Higher technical degree લેને કે લિયે ઓર Doctorate હોના હે તો દો-ચાર-પાંચ સાલ નિકાલને પડતે હેં. (તબ તક) આદમી પચીસ સાલ કા હો જાતા હે. તેઈસ સાલ, પચીસ સાલ, સત્તાઈસ સાલ (કા હો જાતા હે). સંસાર મેં ભી એક પેટ ભરને કે લિયે જીવકો બીસ-પચીસ સાલ કા પરિશ્રમ કરના પડતા હે. કિતના Period હે ? One generation ... એક પીઢી કા ઇસકા Period બોલા જાતા હે. પેટ ભરને કે લિયે ઇતના કરના પડતા હે. અનંત કાલ કા સુખ ભોગને કે લિયે તૂને ક્યા- ક્યા કિયા ? કિતના પરિશ્રમ કિયા ? જિસ દેહ કે લિયે ઇતના પરિશ્રમ (કિયા) તો સત્પુરુષ કહતે હેં કિ, દેહ કી જિતની દરકાર તૂને કી ઉસસે અનંતગુની દરકાર આત્મા કી કર, કરની ચાલિયે.

અનંત કાલ અનંત પરિશ્રમ, અનંત દરકાર, અનંત સાવધાની દેહ કે લિયે કી, અબ ઉસસે અનંતગુની આત્મા કે લિયે કરની હે. ભાવ સે (કરની હે), સમય કી ઇતની જરૂરત નહીં હે. (ક્યોંકિ) ઇતના સમય નહીં લગતા હે. વસ્તુ મેં તાકત ઇતની હે કિ કામ કરને મેં ઉતના સમય નહીં લગતા હે. યહ ઉસકી તાકત કા કારણ હે. લેકિન ભાવ તો પ્રચુર સે, જોર સે ઉઠના ચાલિયે. ‘જગત ઇષ્ટ નહીં આત્મ સે’ સારે જગત કો

એક લાત મારકે ઉડા દેના. જગત કી મુઝે કોઈ પરવાહ નહીં હે, મેં મેરા કામ પહલે કરુંગા. મેરે કાર્ય કરને મેં જગત કે કોઈ પદાર્થ બીચ મેં આવે ઓર બાધા કરે (તો) મેં ઉસકો ફેક દૂંગા. મેરા કામ પહલે હે. ઐસે જોર સે બાત આની ચાલિયે.

‘સોગાનીજી’ કહતે હેં કિ, તરાજુ કે એક પલ્લે મેં ત્રીનકાલ ત્રીનલોક ઓર એક પલ્લે મેં મેરા પરમાત્મા, મેરી આત્મા (યાની) મેં. મેરા પલ્લા બૈઠ જાતા હે (દૂસરા) પલ્લા ઉલડ જાતા હે. ઊંચા હો જાતા હે (ઐસે) નહીં, ઉસ પલ્લે કો તો મેં ફેક દેતા હું. ઇતના મેરા મેરે પર વજન હે ! તબ કામ હોતા હે. કામ જબ હોતા હે કિ ઇતના વજન આતા હે તબ. ઇતના મહાન મેં હું ઓર ઇતની મેરે કાર્ય કી મેરે લિયે ઇતની Priority હે, ઇતની મુખ્યતા હે, ઇતની વિશેષતા હે ઓર સબ ગૌણ હેં.

યહાં તો કહતે હેં કિ, ‘અંતર મેં અમૃતફલોં કા ચૈતન્યવૃક્ષ લગા હે ઉસે દેખ તો અનેક પ્રકાર કે મધુર ફલ એવં રસ તુઝે પ્રાપ્ત હોંગે...’ દેખને માત્ર સે ! જૈસે કહતે હેં કિ, કોઈ પ્રિયજન કા પચીસ-પચીસ સાલ કા વિયોગ હોતા હે તો દેખતે હી આનંદવિભોર હો જાતે હેં ! મિલને પર હી આનંદવિભોર હો જાતે હેં ! અભી તો દૂર સે દેખે તો ભી આનંદવિભોર હો જાતે હેં. યહ તો અનંત આનંદ સે લબાલબ ભરા હુઆ પદાર્થ હે. અવસ્થા ઉસકે સન્મુખ હોકર દેખને (માત્ર સે) ઇતના આનંદ છા જાતા હે, આનંદ સમાતા નહીં હે.

મુમુક્ષુ :- ‘ઘટ અંતર ન સમાય’

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- ‘ભાગચંદજી’ કા પદ હે, ‘ઘટ અંતર ન સમાય’ ઘટ માને અંતર્મુખ હોનેવાલી પર્યાય. અંતર મેં હોનેવાલી જો પર્યાય (હે) ઉસમેં આનંદ સમાતા નહીં હે. ઇતના ઉભરકર ઇસમેં ભાવ આતા હે. ઐસા રસ - આનંદરસ તુઝે પ્રાપ્ત (હોગા), શાંતરસ પ્રાપ્ત હોગા, જ્ઞાનરસ પ્રાપ્ત હોગા ઓર ‘તૂ તૃપ્ત-તૃપ્ત હો જાયગા.’ વાસ્તવિક તૃપ્તિ વહાં આવેગી.

ગુણસ્થાન અનુસાર જિતના સાધકભાવ સિદ્ધ

હોતા હૈ, સિદ્ધ માને પ્રાપ્ત હોતા હૈ, ઉતની તૃપ્તિ બનતી હૈ. લેકિન તૃપ્તિ કી જો જાત હૈ વહ પરિપૂર્ણ તૃપ્તિ હૈ ઉસકી જાત હૈ. તારમ્યતા હીનાધિક હોતી હૈ લેકિન તૃપ્તિ તૃપ્તિ હી હોતી હૈ, તૃપ્તિ મેં અતૃપ્તિ નહીં હોતી. જૈસે વીતરાગતા હૈ વહ જઘન્ય વીતરાગતા, મધ્યમ વીતરાગતા, ઉત્કૃષ્ટ વીતરાગતા તારતમ્ય ભેદ સે કહ સકતે હૈં. ફિર ભી વીતરાગતા મેં રાગ નહીં હૈ. શુદ્ધિ મેં જઘન્ય શુદ્ધિ, મધ્યમ શુદ્ધિ, ઉત્કૃષ્ટ શુદ્ધિ કહ સકતે હૈં લેકિન શુદ્ધિ મેં અશુદ્ધિ નહીં હૈ.

જૈસે થોડા નફા હૈ લેકિન ઉસમેં નુકસાન નહીં હૈ. નફા તો નફા હી હૈ ઓર નુકસાન હૈ ઉસમેં નફા નહીં હૈ. હૈ ન ? ચાહે થોડા હો યા જ્યાદા. વૈસે તૃપ્તિ મેં તૃપ્તિ હી હૈ, તૃપ્તિ મેં અતૃપ્તિ નહીં હૈ. ચતુર્થ ગુણસ્થાન મેં તૃપ્તિ હોવે, શુદ્ધોપયોગ હોતે હી તૃપ્તિ હોવે, ઉસમેં તૃપ્તિ હી હોતી હૈ, ઉસમેં અતૃપ્તિ નહીં હોતી હૈ.

કહતે હૈં કિ, 'તૂ તૃપ્ત-તૃપ્ત હો જાયગા.' ઇસલિયે કહતે હૈં. કોઈ યહ કહેંગે કિ, અભી તો ચતુર્થ ગુણસ્થાન હોગા ઓર પરિપૂર્ણ તૃપ્તિ તો વીતરાગપદ મેં, બારહવેં ગુણસ્થાન મેં, તેરહવેં ગુણસ્થાન મેં હોગી. (તો કહતે હૈં કિ), નહીં, અભી સે તૂ તૃપ્ત હો જાયગા. ઓર ચૌદહ ગુણસ્થાન કે પાર જો પદાર્થ હૈ ઉસકા તુઝે સ્વયં કે રૂપ મેં અનુભવ હોગા. ફિર ઉસમેં અતૃપ્તિ કા કહાં સવાલ હૈ ? તેરહવેં-ચૌદહવેં ગુણસ્થાન મેં, સિદ્ધદશા મેં પૂર્ણ તૃપ્તિ હોતી હૈ ન ? યહાં તો કહતે હૈં કિ, ચૌદહ ગુણસ્થાન સે પાર તેરા સ્વરૂપ હૈ ઉસકા અપનેરૂપ અનુભવ હોતા હૈ. ઉસમેં અતૃપ્તિ કેસે હોગી ? ઉસમેં અતૃપ્તિ હોને કા સવાલ નહીં હૈ. ઐસા હો જાયેગા.

મુમુક્ષુ :- આત્મા મેં હી સુખ ભરા હૈ. મહાન પદાર્થ હૈ ઓર વહીં સુખ ભરા હૈ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- સર્વોત્કૃષ્ટ મહાન પદાર્થ હૈ. અપને લિયે તો દૂસરે સબ પદાર્થ નિકમ્મે હૈં, કિસી ભી કામ કે નહીં હૈં.

યહાં સંસાર સે વિમુખ હોકર અપને સ્વયં કે હિત મેં શામિલ હોને કી યહ પ્રેરણા હૈ. સત્પુરુષ કે વચનોં મેં એક પ્રેરણા હૈ કિ, તૂને સંસાર કા દુઃખ બહુત ભોગા. અગર તુઝે દુઃખ સે છૂટકર સુખ મેં આના હો તો અંતર મેં અમૃતફલ કા ચૈતન્યવૃક્ષ લગ ગયા હૈ, લગા હુઆ હી હૈ. અનાદિ સે તૈયાર હૈ. પકાપકાયા ફલ હૈ ! ઐસા ભી નહીં હૈ કિ, પાની-ખાત લગાઓ, સિંચન કરો ફિર પકેગા જબ ખાયેંગે. પકાપકાયા અમૃતફલ તૈયાર હૈ ! અપની આલસ સે વહ વિમુખ રહતા હૈ. સન્મુખ હોતે હી ખાત ખતમ !

મુમુક્ષુ :- અરિહંત, સિદ્ધ ઉત્તમ, મંગલ શરણ હૈં, ઐસા આતા હૈ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- વહ વ્યવહાર સે મંગલ હૈ. વહ બોલ તો આ ગયા. નિશ્ચય સે તો અપની આત્મા પરમ મંગલ હૈ. સ્વયં કી આત્મા પરમ મંગલ હૈ ઇસકે આગે અરિહંત, સિદ્ધ, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય અપરમ મંગલ હૈં. પરમ મંગલ નહીં હૈં, અપરમ હૈં. ઐસી ખાત હૈ.

'ગુરુદેવ' તો પ્રવચન મેં ઇસસે ભી આગે જાતે થે કિ, અપના ત્રિકાલી પરમાત્મા પરમભાવ હૈ ઓર ઇસકે આગે સિદ્ધદશારૂપ પરિપૂર્ણ શુદ્ધદશા અપરમભાવ હૈ.

પ્રશ્ન :- સિદ્ધદશા ?

સમાધાન :- હાં, અપરમભાવ હૈ. ફિર દૂસરે સિદ્ધ કા તો કહના હી ક્યા? સ્વયં કી સિદ્ધદશા કી ખાત હૈ. અભી તો હુઈ નહીં. કહનેવાલે કો તો અભી હુઈ નહીં. ઓર જિનકો હોતી હૈ વે તો કહતે નહીં. ઉનકે તો ભાષા રહતી નહીં, વે તો અદેહી હૈં. ઉનકો મન, વચન, કાયા કા સંજોગ નહીં હૈ. વે તો અશરીરી હોતે હૈં તો ઉનકે તો વાણી નહીં હોતી કિ, વે (કુછ) કહે કિ, સિદ્ધદશા સે ભી યહ આત્મા પરમોત્કૃષ્ટ હૈ. લેકિન જહાં તક વાણી હોતી હૈ, અર્હંત, મુનિરાજ, સત્પુરુષ આદિ (કો વાણી હોતી હૈ). અભી ઉનકો સિદ્ધદશા નહીં હુઈ હૈ. વે કહતે હૈં કિ, ઇસ પરમભાવ કે આગે એક સમય કી સિદ્ધદશા અપરમભાવ હૈ. હોનેવાલી સિદ્ધદશા

અપરમભાવ છે. એસા જિનકા સર્વોત્કૃષ્ટ સ્થાન છે, ઉત્કૃષ્ટ સે ઉત્કૃષ્ટ સ્થાન છે વહ સ્વયં કા નિજ આત્મપદ છે. 'જે સ્વરૂપ સમજ્યા વિના, પામ્યો દુઃખ અનંત' યહ ઇસ સ્વરૂપ કી બાત છે.

પ્રશ્ન :- ઇતના મહાન સ્વરૂપ હૈ ફિર વહ ગયા કહાં ?

સમાધાન :- ગયા હી નહીં ન ! કહી ગયા નહીં, ઇધર હી છે. કિધર (ભી ગયા) નહીં. વહ 'સોગાનીજી'ને લિયા છે. ૬૩૭ (નંબર કા બોલ છે). 'મૈં તો અભી હી સિદ્ધ હૂં' ઠીક ! અભી તો કપડે ભી પહને હુએ હૈં, અભી શરીર કી દિગંબર દશા ભી નહીં આપી (ફિર ભી) કહતે હૈં કિ, 'મૈં તો અભી હી સિદ્ધ હૂં' ઇસકે પહલે અવસ્થા મેં 'ચૌદહવાં ગુણસ્થાન હોગા...' મુનિદશા કી તો બાત હી નહીં કરતે. સિદ્ધપદ આને કે પહલે 'ચૌદહવાં ગુણસ્થાન હોગા ઓર બાદ મેં સિદ્ધાલય મેં જાના હોગા...' અયોગી કેવલી દશા ! સયોગી કેવલી તક કી બાત નહીં લી. મુનિદશા કી બાત નહીં લી, સયોગી કેવલી - અરિહંત દશા કી બાત નહીં લી, અયોગી કેવલી કી બાત લી. સિદ્ધ દશા કી બાત કરની હૈ ન ? તો ઇસકે પહલે તો ચૌદહવાં ગુણસ્થાન હોગા, ફિર સિદ્ધાલય મેં જાના હોગા. (યહ સબ) નિશ્ચિત છે, અપની પ્રતીત મેં વહ બાત નિશ્ચિત છે કિ, અભી તો સમ્યગ્દર્શન હુઆ છે લેકિન ચૌદહવાં ગુણસ્થાન હોગા, હોગા હી હોગા. બાદ મેં સિદ્ધાલય મેં જાના હોગા. ક્ષેત્રાંતર હો જાયેગા. માને ઇસ મનુષ્યલોકમેં સે સિદ્ધશિલા તક જાના હોગા. એક સમય મેં ઇતની મુસાફરી - Travelling હો જાયેગી. બિના સાધન ! ન મોટર ચાહિયે, ન પ્લેન ચાહિયે, ન કોઈ જહાજ ચાહિયે, ન હવાઈ જહાજ ચાહિયે, કુછ નહીં ચાહિયે. એક સમય મેં 'ક્ષેત્રાંતર વગૈરહ હોગા; લેકિન યહ સબ કાર્ય પર્યાય મેં હોગા.' યહ સબ કાર્ય કિસમેં હોગા ? મેરે ત્રિકાલી મેં નહીં. ઇસકા મતલબ (યહ છે). પર્યાય મેં હોગા, મેરે મેં નહીં.

'લેકિન યહ સબ કાર્ય પર્યાય મેં હોગા. પર્યાય કા કાર્ય પર્યાય મેં હોતા હૈ,...' હોગા તબ હોગા, હોતા

હૈ તો હોતા હૈ, 'મેરે મેં નહીં. મૈં તો અભી હી સિદ્ધાલય મેં બૈઠા હૂં' ઠીક ! મૈં અભી સિદ્ધ હૂં ઓર મેરે સિદ્ધાલય મેં બૈઠા હૂં. વહ સિદ્ધાલય દૂસરા સિદ્ધાલય હૈ. મૈં તો અભી હી સિદ્ધ હૂં. મેરે સિદ્ધસ્થાન મેં બૈઠા હૂં. આલય માને સ્થાન. જિનાલય બોલતે હૈં, મહાલય બોલતે હૈં. મહલ કો મહાલય બોલતે હૈં. જિન બૈઠતે હૈં ઉસે જિનાલય કહતે હૈં. સિદ્ધ બિરાજમાન હોતે હૈં ઉસે સિદ્ધાલય કહતે હૈં. તો કહતે હૈં કિ, મેરા સિદ્ધાલય (યહાં છે). અસંખ્ય ક્ષેત્ર કા મેરા સિદ્ધાલય હૈ. યહ મેરા અસંખ્ય ક્ષેત્ર કા સિદ્ધાલય તો અનાદિઅનંત હૈ. ઇસ ક્ષેત્ર મેં કોઈ ફેરફાર હોતા નહીં.

'અભી હી સિદ્ધાલય મેં બૈઠા હૂં. કભી કહીં આયા ભી નહીં...' મેરે સિદ્ધાલયમેં સે મૈં કભી કહીં 'ગયા ભી નહીં.' કભી (કોઈ) આયા ભી નહીં. એસા સિદ્ધ સ્વરૂપ જો અપના આત્મા હૈ, એસી ઇનકી ભાવના હોતી હૈ. ભાવના ઇસલિયે ઉસે કહતે હૈં કિ, ઇસકી સન્મુખતા કા ઓર ઇસ રૂપ અનુભવ કા, ઇસ રૂપ અભેદ અનુભૂતિ કા પ્રયત્ન મૌજૂદ હૈ. ઇસલિયે એસી નિજપદ કી યહ ભાવના હૈ. ઉસે આત્મભાવના કહતે હૈં. 'આત્મભાવના ભાવતા જીવ લહે કેવળજ્ઞાન રે'

સારે શાસ્ત્રોં મેં, પૂરે કે પૂરે સબ શાસ્ત્રોં મેં યહી એક બાત કહને કા કહનેવાલોં કા મકસદ હૈ. યહી એક અભિધેય હૈ ઓર ભગવાન કી દિવ્યધ્વનિ મેં ભી યહી એક બાત કી મુખ્યતા રહી. તીર્થકર કી દિવ્યધ્વનિ મેં, સભી તીર્થકરો કી, અનંત તીર્થકરો કી દિવ્યધ્વનિ મેં યહી એક આત્મસ્વરૂપ કી બાત મુખ્ય રહી. બાર-બાર હમ તુઝે તેરે નિજપદ કો દર્શાતે હૈં. યહ ભી ઇચ્છા નહીં હૈ, ભગવાન કો તો ઇચ્છાપૂર્વક વાણી નહીં હોતી. લેકિન પૂર્વકર્મ કે ફલરૂપ વાણી સ્વયં ભાષાવર્ગણારૂપ હોકર પૂર્વ કે દ્રવ્યકર્મ કે અનુકૂલ નોકર્મરૂપ બન જાતી હૈ. ઉસમેં યહી બાત આતી હૈ. ખુદ તો વીતરાગ બન ગયે હૈં, ખુદ કો તો ન લેના હૈ, ન કુછ દેના હૈ. ન ઉપદેશ દેના હૈ, ન સુનનેવાલોં સે કુછ લેના હૈ.

અહા ! આત્મા અલૌકિક ચૈતન્યચન્દ્ર છે, જિસકા અવલોકન કરને સે મુનિયોં કો વૈરાગ્ય ઉછલ પડતા છે. મુનિ શીતલ-શીતલ ચૈતન્યચન્દ્ર કો નિહારતે હુએ અઘાતે હી નહીં, થકતે હી નહીં. ૯૧.

અબ જો ૯૧ નંબર કા બોલ હે વહ મુનિદશા કા બોલ હે. ‘અહા ! આત્મા અલૌકિક ચૈતન્યચન્દ્ર છે, જિસકા અવલોકન કરને સે મુનિયોં કો વૈરાગ્ય ઉછલ પડતા છે.’ બોલ છોટા હોતા હે લેકિન ઇસમેં ભાવ કિતને ભરે હેં ! કહતે હેં કિ, યહ તો ‘અલૌકિક ચૈતન્યચન્દ્ર છે,...’ જૈસે ઉપમા લેવે, ચન્દ્ર કી ઉપમા દી તો પૂર્ણ માસ કા જો ચન્દ્ર હે, પૂર્ણ માસ ! વહાં માસ પૂરા હોતા હે. ગુજરાતી મેં થોડા ઉલટા હે. હિન્દુસ્તાન મેં તો પૂનમ કો પૂર્ણ માસ હોતા હે ઓર અમાસ માને અર્ધ માસ હોતા હે. અર્ધ માસ કો અમાસ કહતે હેં. પૂર્ણ માસ કા ચન્દ્ર ઉદિત હોતા હે તો સમંદર ઉછલતા હે. સમંદર ઉછલતા હે કિ નહીં ઉછલતા હે ?

યહાં કહતે હેં કિ, મુનિરાજ કો વૈરાગ્ય કા સમુદ્ર ઉછલતા હે, વીતરાગતા કા સમુદ્ર ઉછલતા હે. ‘આત્મા અલૌકિક ચૈતન્યચન્દ્ર છે,...’ લૌકિક મેં જિસકી ઉપમા નહીં દે સકતે. લોક મેં જિસકી બરાબરી કા કોઈ પદાર્થ નહીં હોને સે જિસકી ઉપમા લાગૂ નહીં કર સકતે, ઐસા ‘આત્મા અલૌકિક ચૈતન્યચન્દ્ર છે, જિસકા અવલોકન કરને સે...’ અવલોકન માત્ર સે મુનિરાજ કા ઉપયોગ ક્ષણ મેં અંતર મેં જાતા હે (તો) અંતરમેં સે વૈરાગ્ય ઉછલતા હે. અસંખ્ય પ્રદેશ મેં, પ્રદેશ-પ્રદેશ મેં વીતરાગતા ઉછલ પડતી હે.

પ્રશ્ન :- યહ તો મુનિ કી બાત ચલી, હમે ક્યા કરના ?

સમાધાન :- ઐસા હોને કી ભાવના (ભાની હે), ભાવના કી બાત હે. ‘અમેરિકા’ કી સંપત્તિ ‘અમેરિકા’ મેં હે. અભી યહાં ઇસકી બાત લોગ ક્યોં કરતે હેં ? ઐસી લંબી-લંબી મોટર હોતી હે ! ઉસ વૈભવ મેં તેરી રુચિ હે. પૌદ્ગલિક વૈભવ મેં તેરી રુચિ હે કિ,

ઇસકા બંગલા દેખા ? ઉસકે તો Toilet મેં Air-condition રખા હે ! ઠીક ! ઐસા કહુંગે. ક્યોં ભાઈ ? તેરે પાસ તો હે નહીં. લેકિન ભાવના જિસે હોતી હે ઉસે યહ બાત આયે બિના રહતી નહીં.

જૈસે ભૌતિક વૈભવ કી ભાવનાવાલે કો ભૌતિક વૈભવ કી સંપત્તિ નહીં હોનેપર ભી ઇસકી મહિમા રહતી હે તો દૂસરે કી તારીફ કરતે હેં. અપને (ખુદ કો) મુનિપદ નહીં હોવે લેકિન જિસે આત્મિકવૈભવ પૈદા હુઆ હે (ઐસે) સત્યપુરુષ ઉસકી મહિમા, ઉસકી તારીફ કરતે હેં. ઉનકો યહ ભાવના હે કિ, મેરી ઐસી દશા કબ હો ! ‘અપૂર્વ અવસર ઐસા કબ આયેગા મુજે ?’ ઐસી ભાવના હોતી હે.

વહ સમજ મેં આયે ઐસા નહીં હે કિ, આહાર લેને જાય, જંગલમેં સે નગર તક આયે ઓર આહાર નહીં મિલે તો લૌટ જાયે તો ઉન્હેં આનંદ ઉછલતા હે, યહ સમજ મેં આયે ઐસા નહીં હે. ક્યોંકિ યહાં સ્વયં કો ઐસા અભ્યાસ હે કિ, ઇચ્છિત પદાર્થ ન મિલે તો દ્વેષ હોવે. અપની ઇચ્છા અનુસાર નહીં હો તો દ્વેષ હોવે. ઘર મેં એક છોટી બાત મેં અપની ઇચ્છા અનુસાર નહીં હો તો દ્વેષ હોવે. ‘મૈને ઐસા કહા થા ઓર કિયા નહીં.’

યહાં મુનિરાજ કી બાત અલગ હે. અલૌકિક દશા હે ! ઐસી અલૌકિક દશા હે કિ, દ્વેષ કા સવાલ હી નહીં. ક્યોંકિ એક ક્ષણ મેં અંદર જાતે હેં. યહાં આહાર કા વિકલ્પ ચલતા હે તો ભી ચલતે-ચલતે અંદર આનંદ મેં ચલે જાતે હેં. યહાં વિકલ્પ ક્યા આયા કિ, આહાર કા જોગ નહીં હે, યોગ નહીં હે કિ સીધે અંદર ચલે જાતે હેં. વહ વિકલ્પ છૂટા કિ સીધે અંદર જાતે હેં. અંદરમેં સીધા આહાર લેતે હેં, આનંદ કા આહાર લે

લેતે હેં (તો) તૃપ્તિ હોતી હે, આત્મા પુષ્ટ હોતા હે. ખલાસ ! વિકલ્પ છૂટા વહ છૂટા, ફિર સે વહ વિકલ્પ ઉત્પન્ન નહીં હોતા. વીતરાગતા કી સ્થિરતા ઇતની હે કિ, આહાર કા વિકલ્પ એક બાર છૂટ ગયા કિ, આહાર નહીં. આજ આહાર નહીં લેના હે ફિર દૂસરે દિન તક દુબારા વિકલ્પ નહીં આતા. વિકલ્પ આતા હી નહીં, ઉત્પન્ન હી નહીં હોતા. એસી સીધી જોર સે વીતરાગ દશા આતી હે ! યહાં આહાર કા યોગ નહીં બનતા તો દૂસરે કો જોર સે દ્વેષ આતા હે, યહાં જોર સે એસી વીતરાગ દશા આયે કિ, ચૌબીસ ઘંટે તક તો દૂસરા આહાર કા વિકલ્પ ઉત્પન્ન નહીં હોતા. એસા નહીં હે કિ, ફિર સે એક સેકંડ મેં, દો સેકંડ મેં દુબારા આહાર કા વિકલ્પ આયે ઓર ઉસે દબાકર જંગલ મેં ચલે જાયે. એસા નહીં હે. ચૌબીસ ઘંટે તક તો વહ પ્રશ્ન હી નહીં હે. અંદરમેં ઉતના આનંદ ઓર શાંતિ હે !

અમૃતફલ કા ચૈતન્યવૃક્ષ લગા હે. ચૈતન્ય કે અનેક ગુણો કે અનેક અલૌકિક રસ કો પીતે હેં. જૈસે કોઈ અભી સફરજન કા જ્યૂસ પીયે ફિર ઘટક... ઘટક ગને કા રસ પીયે ઓર આમ કા રસ પીયે, રસ કે ઉપર રસ પીયે. વે સબ ફલ કે રસ હેં. વિભિન્ન રસ ઉસે કેસે મીઠે લગતે હેં ! વહ મિઠાસ તો કુછ નહીં હે, વહ તો ઇસકે પાસ ઝહર હે, ઉતની મિઠાસ જિસકી હે ! જિસકે પાસ વહ મિઠાસ ઝહર હે, ઉતની જિસકી મિઠાસ હે ! એસે વિભિન્ન આત્મગુણો કા રસ પીતે હેં. વિકલ્પ ખલાસ હો ગયા. વહ (ફિર સે) ઉત્પન્ન હો વહ પ્રશ્ન નહીં હે.

મુમુક્ષુ :- પૂરે મહીને મેં પાંચ બાર આયે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- મહીને મેં પાંચ બાર ક્યા પાંચ મહીને મેં વે તો એક બાર આહાર કરે !

મુમુક્ષુ :- મુંહમેં સે સુગંધ નિકલતી હો.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- મુંહ સે (સુગંધ) ક્યા એસે ઋદ્ધિધારી હોતે હેં કિ, ઉનકી વિષ્ટામેં સે સુગંધ નિકલતી હે, ઉનકે પસીનેમેં સે સુગંધ નિકલતી હે ! ચૌસઠ ઋદ્ધિધારી (પૂજન) મેં આતા હે ન ? ઉનકે શ્વાસોશ્વાસમેં

સે સુગંધ નિકલે ! એસા તો દેવોં કો ભી હોતા હે. દેવોં કે શરીર મેં સુગંધ હોતી હે, દેવોં કે શરીર મેં દુર્ગંધ હોતી નહીં. દેવ તો ઉનકો વંદન કરતે હેં ! વે સબ દેવ તો ઉનકો વંદન કરને આતે હેં ! ઉપર સે ઉતર-ઉતરકર આતે હેં.

કહતે હેં કિ, 'જિસકા અવલોકન કરને સે મુનિયોં કો વૈરાગ્ય ઉછલ પડતા હે. મુનિ શીતલ-શીતલ ચૈતન્યચન્દ્ર કો નિહારતે હુએ અઘાતે હી નહીં, થકતે હી નહીં.' આપણે ગુજરાતીમાં 'ધરાતા નથી' (કહે છે). ધરાતા નથી અને થાકતા નથી. ધરાતા માને તૃપ્ત હોના.

જૈસે ભગવાન 'બાહુબલી' કી પ્રતિમા હે (ઉસે) સામને દેખતે હી રહો (એસી હે). વૈસી હી અરિહંત ભગવાન કી પ્રતિમા હોતી હે. પ્રતિમા ક્યા સાક્ષાત્ જો જિનબિંબ હે, સાક્ષાત્ જો જિનબિંબ હે (વહ એસા હી હોતા હે). સમવસરણ મેં આખિર કા પરમ ઔદારિક દશા મેં જો ચરમ શરીર હે, વહ એસા હે કિ, દેખનેવાલે ઉપયોગ બદલના નહીં ચાહતે. ઉપયોગ થંભ જાયે. ઇતના તેજસ્વી, ઇતના શાંત (હે). ઇતના શાંત તેજ (હે) ! ઓર સબ તરહ સે ઇતના સુંદર (હે), સબ તરહ સે ઇતની સુંદરતા (હે કિ,) ઉપયોગ બદલના નહીં ચાહે. દેખે વહ તો દેખતે હી રહે, બસ ! દેખતે હી રહે. ખાના ભી ભૂલ જાયે, પીના ભી ભૂલ જાયે, ટટ્ટી-પિસાબ ભૂલ જાયે, સબ ભૂલ જાયે. નીંદ ભૂલ જાયે, સબ ભૂલ જાયે. સબ છૂટ જાયે. સાક્ષાત્ તીર્થકર જો હોતે હેં (ઉનકે) સમવસરણ મેં જાકર સબ ભૂલ જાતા હે. સમવસરણ મેં (જાનેવાલે) કો વહાં નીંદ નહીં આતી. ચૌબીસ ઘંટે મેં છ: બાર (દિવ્યધ્વનિ) નિકલતી હે તો વહાં કોઈ નીંદ નહીં લેતે, ન કોઈ ખાને-પીને કો જાતે હેં, ન કોઈ ટટ્ટી-પિસાબ કો (જાતે હેં).

મુમુક્ષુ :- પૌન સેકંડ નીંદ હોતી હે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- નહીં, વહ તો મુનિ કી બાત હે. યહાં તો સમવસરણ મેં જાનેવાલે ભગવાન કે દર્શન કરે તો ઉસે વહાં ઉપયોગ ઘુમાના અચ્છા નહીં લગતા. એસા શાંત સૌમ્યરૂપ હોતા હે.

યહાં તક રખતે હેં.

ધન્ય અવતાર !

પૂજ્ય બહેનશ્રી ચંપાબેન સંબંધી પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામીના ઉદ્દગારો

(તા.૧૨-૯-૭૧)

બેન (ચંપાબેન)ની નિર્મળતા ઘણી ઘણી ! નિર્મળતા-નિર્મળતા ! અપૂર્વ અપૂર્વ સ્મરણ ! શાંત ને ગંભીર ! બેન તો ધર્મરતન છે. મહાવિદેહમાં ઘણી નિર્મળતા હતી; ત્યાંની નિર્મળતા લઈને અહીંયાં આવ્યા છે. એકાંતપ્રિય, શાંતિથી એકલા બેસી પુરુષાર્થ કર્યા કરે છે. એમને ક્યાં કોઈની પડી જ છે ! કુટુંબનીયે નથી પડી. અંતર સ્વરૂપપરિણતિમાં રહે છે.



(તા.૧૯-૯-૭૧)

ઓહો ! બેનના જ્ઞાનની નિર્મળતાની શી વાત કરવી ! ઘણું સ્પષ્ટ જ્ઞાન ! બેન તો જબરી આરાધના કરે છે. એકલાં બેઠાં પોતાનું કામ કર્યા જ કરે છે. ...હવે તો એમને બહાર પાડવાં જ છે. એમનો જયજયકાર થશે, એમની ઘણી જાહોજલાલી થશે, જે જીવશે તે જોશે. અલૌકિક દ્રવ્ય છે, એમની લાઈન જ જુદી છે.



(ભા.સુ.૧૧, સં.૨૦૨૬)

...બેન બોલે છે તો ઘણું થોડું. દીકરીઓનાં ઘણાં ભાગ્ય છે. જો મૌન રહે તોપણ એનાં દર્શનથી તો લાભ જ છે. ...એમને ઘણા વખતથી ખ્યાલમાં હતું : બેનની ઘણી શક્તિ છે.



(કા.વ.૧૨, સં.૨૦૨૨)

રાજુલને પૂર્વભવનું-ગીતાનું યાદ આવ્યું તે તો સામાન્ય વાત; બેનને (બહેનશ્રીને) તો દ્રવ્ય ને ભાવે-બંને પ્રકારે સ્મરણ છે. શુદ્ધ આત્માના જ્ઞાન સહિતનું ઘણું જ્ઞાન છે. ભાવસ્મરણ એટલે નિજ શુદ્ધ આત્માનું, અને દ્રવ્યસ્મરણ એટલે આ જીવ પોતે પૂર્વે ક્યાં હતો તે-તે બંનેનું જ્ઞાન છે. એ તો ભગવતીસ્વરૂપ છે, ભગવતી-બેન છે.



શ્રી કુંદકુંદ-આચાર્યદેવ વિદેહમાં ગયા હતા તેના કોણ સાક્ષી છે ? સાક્ષી આ ચંપાબેન બેઠાં છે તે છે.



બેનની ગંભીરતા તો જુઓ ! બેનના બોલ (વચનામૃત) બહુ ગંભીર છે. બેનને તો ક્યાં બહાર પડવું છે ? માંડ બેનનું પુસ્તક બહાર આવ્યું. બેનનું પુસ્તક તો બહુ સરસ ! બહુ સરસ ! અધ્યાત્મની રુચિ હોય તેને માટે તો બહુ સરસ. આવું ક્યારે બહાર આવે ! બેનને તો વિચાર નહોતો ને બહાર આવી ગયું. જગતનાં ભાગ્ય છે !



(તા.૨૬-૮-૭૨)

બેનનો આત્મા તો મંગળમય છે, ધર્મરતન છે. હિંદુસ્તાનમાં બેન જેવાં અજોડ સ્ત્રીઓમાં કોઈ છે નહિ, અજોડ રત્ન છે. બાઈઓનાં તો મહાભાગ્ય છે કે આવું રત્ન મળ્યું છે.



(તા.૧૭-૩-૭૩)

આ બેનની તો લાઈન જ જુદી છે. એમનો વૈરાગ્ય, જાતિસ્મરણજ્ઞાન, એમની દશા - બધું જુદું જ છે. એમને ક્યાં કોઈની પડી જ છે ! કોઈ વંદન કરે કે ન કરે, એ ક્યાં કોઈને જુએ જ છે !



(તા.૫-૮-૭૪)

...બેન તો ચૈતન્ય-હીરલો છે, તેને હીરેથી શું વધાવવાં ! તે તો પોતે જ હીરો છે. હું આહાર કરવા તેમના ઘરે ગયો ને મેં કહ્યું કે બેન ! લોકોને ઘણો ઉત્સાહ છે. વજુભાઈ-હિંમતભાઈ ત્યાં બેઠા હતા. બેન કહે : 'હું તો આત્માની સાધના કરવા અહીં આવી છું, આ તો બોજો લાગે છે.' એમને બહારની કાંઈ પડી નથી, જેટલું કરો તેટલું ઓછું છે.



બેનને જાતિસ્મરણમાં આવ્યું છે : ભગવાન પાસે સાંભળ્યું છે કે એક એવું સમકિત હોય છે કે જે ક્ષાયિકને જોડે છે, -એવું 'જોડણી ક્ષાયક' હોય છે. એમને ગોઠતું નથી પણ હવે એ થોડું થોડું બહાર પાડીએ છીએ. ...બેનનું પુસ્તક બહુ સરસ છે, એકલું માખણ છે. 'દ્રવ્યદષ્ટિપ્રકાશ' કરતાં પણ ચડી જાય એવું છે. સાદી, સરળ ભાષામાં ઊંચું તત્ત્વ પીરસ્યું છે.



(તા.૧૭-૮-૮૦)

આ તો બેનની ભાષા તદ્દન સાદી અને અંદરથી બોલેલી. આ તો જરીક બોલ્યાં અને લખાઈ ગયું, નહિતર તો બહાર આવે જ ક્યાંથી ? એકલા રતન પડ્યાં છે ! અન્યમતીનેય એમ થાય કે આવું ક્યાંય નથી ! હીરાનો ભંડાર છે !



(તા.૧૮-૮-૮૦)

આહાહાહા! બેનની લાયકાત !... એ (બેનની આ વાણી) તો કોતરાવાની છે પથ્થરમાં. અઢી લાખ રૂપિયા તે દિ (શ્રાવણ વદ બીજે) થઈ ગયા. (વચનામૃતનું) મકાન બનાવવામાં આવશે.



રાજકોટ, ઇ.સ.૧૯૮૦

આ બેનનાં વચનો છે. અંતર આનંદના અનુભવમાંથી આવેલી વાત છે. ઘણું જોર અંદરનું, અપ્રતિહત ભાવના. આત્માનું સમ્યગ્દર્શન અને અતીન્દ્રિય આનંદની અનુભૂતિ-એમાંથી આ વાત આવી છે. આનંદના સ્વાદમાં મડદાની જેમ હાલે. આહાહા ! સચ્ચિદાનંદ પ્રભુ છે બેન ! અંતરની મહત્તા આડે બહારનું કાંઈ લક્ષ જ નથી.

(શેષ અંશ પૃષ્ઠ સંખ્યા-૭ ઉપર)

પૂજ્ય બહેનશ્રી ચંપાબેન સંબંધી પરમ પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના હૃદયોદ્ગાર

બહુ સારા બોલ લીધાં છે ! એમાં પણ મુમુક્ષુની ભૂમિકાના તો એટલાં સરસ બોલ છે !

ઘણો ઉપકાર છે કે આ બધી વાતો બહાર આવી છે અને લાયક જીવને મેળવવું હોય તો અંતર મેળવણી કરીને પોતે પોતાની ભૂલથી છૂટી જાય, એવું બની શકે. (અધ્યાત્મ સુધા ભાગ-૨, પૃષ્ઠ-૭૮, ૭૯)



કેટલાંક બોલો બહુ અમૂલ્ય આવ્યા છે ! આવી અંદરથી કાઢીને વાત મૂકે, પહેલાં તબક્કે પણ એને શું કરવું જોઈએ ? આગળ વધીને પણ એને શું કરવું જોઈએ ? આમ ચાલજે... આમ ચાલજે... આમ ચાલજે... આમ ચાલજે... તારા ધ્યેયને અંતર અવલંબનમાં પહોંચવા માટે બધી દિશા ચોખ્ખેચોખ્ખી બતાવે છે. આ દિશામાં આવજે, આ દિશામાં નહિ જતો, આ દિશામાં જજે. એવી વાત છે. (અધ્યાત્મ સુધા ભાગ-૨, પૃષ્ઠ-૧૦૬)



એક એક બોલ એવા છે, ડોં ! મુમુક્ષુઓ માટે તો એને નિત્ય સ્વાધ્યાય કરવાનું એક શાસ્ત્ર હોય, જેમ પેલા અન્ય મતમાં કહે છે ને ? ત્યાં 'ગીતા'ની મુખ્યતા આપે છે અને 'ગીતા'ની અંદર 'ગીતા'નો આગળનો એક 'માહાત્મ્ય' નામનો પાઠ હોય છે. એ બીજાએ રચેલો હોય છે. 'ગીતા'ની મૂળ રચના નથી. એમાં રોજ વાંચવું એના ઉપર બહુ આગ્રહ હોય છે કે, રોજ આખી 'ગીતા' વાંચવી. તું આખી ન વાંચ તો રોજ એક અધ્યાય વાંચજે, રોજ એક અધ્યાય ન વાંચ તો આટલા શ્લોક વાંચજે, છેવટે એક શ્લોક પણ વાંચજે, પણ તું રોજ 'ગીતા' વાંચજે. આ મુમુક્ષુને 'ગીતા' જેવો ગ્રંથ છે ! મુમુક્ષુને લાયક ઘણી વાતો કરી છે. સમ્યક્દષ્ટિના - જ્ઞાનીની દશાના પણ અનેકવિધ પરિણામ બતાવ્યા છે કે જેથી મુમુક્ષુ એને અનુરૂપ પોતાની દશા કરી શકે, એને અનુરૂપ પોતાની વિચારણા રાખી શકે અને મુમુક્ષુને યોગ્ય પણ અનેક પ્રકારની, અનેક પડખેથી વાતો કરી છે અને બધી અનુભવગમ્ય - અનુભવસિદ્ધ વાતો છે. (અધ્યાત્મ સુધા ભાગ-૨, પૃષ્ઠ-૧૪૮)



આ વચનામૃતના પ્રવચનો કરતા ત્યારે 'ગુરુદેવ' તો કહેતાં કે, આ ભગવાનની વાણી છે ! આ દિવ્યધ્વનિમાં આવેલો વિષય છે ! એ ભગવાનની વાણી જિનવાણી છે, આ જિનવાણી છે. જો જેની વાણી પૂજ્ય હોય, જેની જડ વાણી પૂજ્ય હોય એને માટે કહેવાની જરૂર છે, સમજાવવાની જરૂર છે કે (એ જ્ઞાની) પૂજ્ય છે કે અપૂજ્ય છે ?

વર્તમાન સમાજને અત્યારે શું જરૂરી છે એ જે 'પૂજ્ય બહેનશ્રી'ના જ્ઞાનમાં આવ્યું છે એ અસાધારણ પ્રકારથી આવ્યું છે. એટલે એ જ વિષય એમના પ્રવચનોમાં નીકળ્યો છે. આ તો પ્રવચનોમાં નીકળેલી વાત લખાઈ ગયેલી છે ને ? ભલે વર્ષો પહેલાં વાત થઈ છે તોપણ વર્તમાન વર્તતા મુમુક્ષુ સમાજની યોગ્યતાને શું પીરસવું જોઈએ, શું દેવું જોઈએ, શું દેવું આવશ્યક છે એ અસાધારણ રીતે જ્ઞાનમાં આવીને આ વાત નીકળેલી છે. (અધ્યાત્મ સુધા ભાગ-૨, પૃષ્ઠ-૨૮૫)



(પૂજ્ય બહેનશ્રીના) મન-વચન-કાયાના યોગ એકદમ ઠરેલ છે. એ અણસાર છે એમાં. ઈ મુનિરાજનો અણસાર છે એટલે એમ કહું. ભલે સમ્યક્દષ્ટિ છે પણ મુનિરાજનો અણસાર છે. (અધ્યાત્મ સુધા ભાગ-૩, પૃષ્ઠ ૪)

દ્રવ્યદષ્ટિ પ્રકાશ પત્રાંક-૩૦ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનું પ્રવચન તા. ૬-૦૮-૧૯૯૧

“...જ્ઞાનાંદી ગઢ,...” જુઓ ! હવે ગુરુદેવને વિશેષણ વાપર્યું છે. ગુરુદેવ છે એ જ્ઞાનાંદી ગઢ છે. “જ્ઞાનાંદી ગઢ, વીતરાગપ્રધાની ગુરુદેવકી પ્રશસ્ત રાગ અંશ નિમિત્તક સિંહગર્જના....” કેવાં છે ગુરુદેવ ? કે, વીતરાગપ્રધાની છે. એવા ગુરુદેવની પ્રશસ્ત રાગના અંશે (અર્થાત્) પરિણામની અંદર પ્રશસ્ત રાગનો અંશ છે. આખો રાગ નથી, પૂરો રાગ નથી, રાગમાં તન્મય નથી. રાગના અંશે (અર્થાત્) અંશના નિમિત્તે ઉત્પન્ન થયેલી. શું ? (તો કહે છે), સિંહ ગર્જના જેવી વાણી - પ્રવચન. રાગાંશ નિમિત્તક પ્રવચન એમ કહ્યું છે. “...સિંહગર્જનાઓંસે ૪૭ નયોંપર પુણ્યવાન મુમુક્ષુઓંકો ઉલ્લાસિત પ્રવચનોંકા લાભ હુઆ, જાનકર અત્યંત પ્રસન્નતા હુઈ.” એ વખતે ૪૭ નયો ઉપરના પ્રવચનો ચાલતા હશે અને પત્ર લખનારે એ સમાચાર લખ્યા હશે કે, અહીંયા ગુરુદેવના ૪૭ નય ઉપરના બહુ સારા પ્રવચનો આવે છે. એ જાણીને મને બહુ પ્રસન્નતા થઈ. ગુરુદેવ તો જ્ઞાનાંદી ગઢ છે, વીતરાગપ્રધાની છે અને એક રાગના અંશના નિમિત્તે જે વાણી છૂટે છે એમાં પણ અદ્ભુત વાતો આવે છે !!

મુમુક્ષુ :- પ્રશસ્ત રાગ અંશ, એમ લખ્યું છે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- (હા), પ્રશસ્ત રાગ અંશ - પ્રવચન આપવાનો રાગ છે એ પ્રશસ્ત રાગ છે. અપ્રશસ્ત એટલે અશુભ અને પ્રશસ્ત એટલે શુભ. પણ શુભ કરતાં પ્રશસ્ત શબ્દ છે એ સાહિત્યની ભાષામાં જરા વધારે સુશોભિત શબ્દ છે. પ્રશસ્ત રાગ નિમિત્તક વાણી નીકળે છે.

મુમુક્ષુ :- ગુરુદેવની વર્તમાન પર્યાયની બન્ને બાજુ એમના ખ્યાલમાં છે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- બધું ખ્યાલમાં છે. જ્ઞાનાંદી ગઢ છે અને રાગ તો એક અંશમાં - ચારિત્રગુણની પર્યાયમાં થાય છે, એના નિમિત્તે વાણી નીકળે છે એમાં પણ મુમુક્ષુઓને લાભ થાય છે ! જરા કિંમત મૂકવા જેવો વિષય તો એ છે કે, જે પોતે - એમનો આત્મા છે એની તો શું કિંમત કરવી !! એમની સાધકદશામાં શાંતિ અને અમૃતનો પ્રવાહ ચાલે છે, એની તો શું કિંમત કરવી !! પણ એ શુદ્ધ પર્યાયના પરિણામની જોડે-જોડે, અહીંને એક બીજો રાગનો

પર્યાય પણ ચાલે છે - જે મલિન છે (અને) આ પવિત્ર છે - સાધકદશાનો અંશ પવિત્ર છે. એની સાથે પ્રવચન આપવાનો પ્રશસ્ત રાગ છે એ મલિન છે. અને એ મલિનતાના નિમિત્તે વાણી નીકળી એ તો પાછી પુદ્ગલ છે !! એ તો ચૈતન્ય પણ નથી ! આમાં તો હજી ચૈતન્યનો અંશ પણ છે. અને એ પુદ્ગલ (વાણી) બીજા જીવોને નિમિત્ત થવામાં - એ પુદ્ગલો જ બીજા જીવોને ચૈતન્યદશા પ્રગટાવવામાં નિમિત્ત થાય છે !! આટલે - ત્રીજે તરભેટે પણ આટલો લાભ થાય છે ત્યારે સીધો લાભ કેટલો હશે !!! પરંપરા લઈએ તો આત્મા જ્ઞાનાંદી ગઢ છે, એના કારણે પવિત્ર દશા છે, એના અવલંબને-એના કારણે (પવિત્ર દશા છે). એ અવલંબન (જે) ચાલે છે એ પૂર્ણ નથી અને અપૂર્ણ છે તો ત્યાં રાગ - પ્રશસ્ત રાગ વ્યવહારનો ઉત્પન્ન થાય છે. અને એ વ્યવહારના રાગના નિમિત્તે વાણીના પુદ્ગલો ઉત્પન્ન થાય છે, આ તો નિમિત્તે-નિમિત્તે (વાત લઈએ) તો (આમ વાત છે). અને એના નિમિત્તે બીજાને ચૈતન્યનો લાભ થાય !! તો સીધો પોતાને આત્મામાં કેટલો લાભ થતો હશે !!! બીજાને પણ - ભિન્ન દ્રવ્યમાં ત્રીજે તરભેટે (પણ) આત્માના નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધે લાભ થાય છે, તો એના આત્મામાં લાભ કેટલો !! આપણે કહીએ છીએ ને ! હીરાની કિંમત કેટલી ? કે એની રજના પણ આટલા પૈસા ઉપજે તો નક્કી કરો કે (હીરાની કિંમત) કેટલી ?

“...જાનકર અત્યંત પ્રસન્નતા હુઈ. પુણ્યઅભાવયોગસે ઇસ અવસરસે મુજે વંચિત હોના પડા, ઇસકા ખેદ રહા.” (અર્થાત્) મારા પુણ્યનો અભાવ છે એટલે મારે એ પ્રવચનોના લાભથી વંચિત રહેવું પડ્યું છે, એનો મને ખેદ છે. જુઓ ! સત્સંગને ગૌણ કરતાં નથી ! સત્સંગ પ્રત્યે તો ઘણું ખેચાણ છે.

“શ્રી ગુરુદેવકે પ્રવચનોંકા મુખ્ય સાર મૈને યહ લિયા હૈ :-” એમ કરીને પોતાના પરિણામની વાત કરવી છે. ગુરુદેવથી મેં આ લાભ મેળવ્યો છે. ગુરુદેવનાં પ્રવચનથી આ સાર મને ગ્રહણ થયો - એમ કરીને ગુરુદેવના માથે નાખે છે.



પૂજ્ય બહેનશ્રીની તત્ત્વચર્ચા

પ્રશ્ન :- સમકિતીને શુભભાવનો નિષેધ વર્તે છે, છતાં જ્ઞાની પ્રત્યે સાચી અર્પણતા તેને જ હોય છે એ વિચિત્રતા લાગે છે !!

સમાધાન :- સ્વભાવમાં શુભભાવ નથી એટલે તેની દષ્ટિમાં શુભભાવનો આદર નથી. એવી વસ્તુસ્થિતિ છે. સમકિતી એક ચૈતન્યતત્ત્વને ગ્રહણ કરે છે પણ વચ્ચે શુભભાવ આવ્યા વિના રહેતા નથી. ચૈતન્યતત્ત્વ જ સર્વસ્વપણે અંગીકાર કરવા જેવું છે. ચૈતન્યતત્ત્વ વિના જગતમાં બીજું કંઈ સારભૂત નથી. આ વિભાવ આત્માનો સ્વભાવ નથી, તે દુઃખરૂપ છે, આકુળતારૂપ છે. જેમણે જ્ઞાયક સ્વભાવને સંપૂર્ણપણે ગ્રહણ કર્યો છે અર્થાત્ જેઓએ પુરુષાર્થ કરીને સ્વરૂપમાં લીન થઈ કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું છે તથા જેઓ વારંવાર સ્વરૂપમાં લીન થાય છે એવા મુનિવરો, તે બધાનો સમ્યગ્દષ્ટિને આદરભાવ આવે છે કારણ કે તેને પોતાના સ્વભાવનો આદર છે. મારો સ્વભાવ જ આદરણીય છે, વિભાવ છે તે હેયરૂપ જ છે -એમ યથાર્થ દષ્ટિ-પ્રતીતિ થઈ છે છતાં જેણે આવી દશા પ્રગટ કરી છે તેનો મહિમા પણ આવે છે. મારો સ્વભાવ જુદો છે અને આ વિકલ્પ જુદા છે. પોતે શુભભાવને આદરણીય નથી માનતો, તો પણ શુભભાવમાં ઊભો છે તેથી શુભભાવનાં જે નિમિત્તો દેવ-શાસ્ત્ર-ગુરુ, તેની મહિમા પણ એટલી જ આવે છે, તેને સ્વભાવની મહિમા છે ને વિભાવ તુચ્છ લાગે છે. છતાં જેણે આ પ્રગટ કર્યું છે-જે તેની સાધના કરે છે-તેની મહિમા આવે છે. સમકિતીને પોતાના સ્વભાવની મહિમા છે, તેથી સ્વભાવને જેણે પ્રાપ્ત કર્યો છે તેવા જ્ઞાનીઓ પ્રત્યે યથાર્થ મહિમા આવે છે.

અંતરદષ્ટિમાં શુભભાવ મારો સ્વભાવ નથી એમ તે માને છે અને તે ક્ષણે ભેદજ્ઞાનની ધારા પણ વર્તે છે. આમ તેને શુભભાવ આદરણીય નથી, છતાં શુભભાવનો રસ ઘણો પડે છે અને સ્થિતિ ઓછી

પડે છે. (સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૨૨)



પ્રશ્ન :- જેટલું થઈ શકે તેટલું વાંચન, મનન પ્રયત્નથી

કરીએ છીએ. છતાં વ્યવહારિક જીવનમાં અવારનવાર જૂઠું બોલવાના કે માયાચારીના ભાવ થઈ જાય છે, કોઈ જીવને દુઃખ થશે એવું જાણવા માટે દરકાર રહેતી નથી. જોકે એ બધું બાહ્ય છે, છતાં શું તે પરિણામથી આત્મસાધનામાં કે તેની પાત્રતામાં નુકસાન ન થાય ?

સમાધાન :- પોતે સમજી લેવાનું કે કંઈ જાતના ભાવ આવે છે. મુમુક્ષુની ભૂમિકામાં અંદર આત્માર્થનું પ્રયોજન મુખ્ય હોય છે. આત્માર્થને ન શોભે એવી જાતના-મર્યાદા તોડીને જે-વિચારો થાય તેવા આત્માર્થને હોય નહિ, તેવાં કાર્યો પણ આત્માર્થને હોય નહિ. જેમાં આત્માર્થતાનું પોષણ થાય, આત્માર્થતા મુખ્ય રહે તેવા ભાવો આત્માર્થને હોય છે. પોતાની આત્માર્થતાની મર્યાદા જેમાં તૂટી જાય તેવા ભાવ આત્માર્થને હોતા નથી. પોતાનાં પરિણામ કંઈ જાતનાં છે તે વિચારીને, તેમાં કચાશ હોય તો પોતે પોતાની પાત્રતા વધારવી. મુખ્ય પ્રયોજન તો આત્માર્થતાનું છે. આત્માર્થતાને ક્યાંય નુકસાન પહોંચે તેવા મર્યાદા રહિતનાં પરિણામ આત્માર્થનાં હોય નહિ.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૩૩)



પ્રશ્ન :- સ્વાધ્યાય કરતી વખતે જ્ઞાતા-દષ્ટાપણું રાખવું જોઈએ તો તે કેવી રીતે રાખવું ?

સમાધાન :- પોતાને અંદર જ્ઞાયકની પરિણતિ પ્રગટ થઈ હોય તો તે કાળે જ્ઞાતા-દષ્ટાપણું રહે છે.હજી જેને જ્ઞાતાપણું પ્રગટ જ થયું નથી તેને તો જ્ઞાતા-દષ્ટાપણું રાખવું મુશ્કેલ પડે છે. જ્ઞાયકને ઓળખી ભેદજ્ઞાન કરી જ્ઞાતાની-ભેદજ્ઞાનની પરિણતિ પ્રગટ કરી હોય તો દરેક શુભભાવ અને અશુભભાવમાં જ્ઞાતાપણું સહજપણે રહે



છે. ક્ષણે ક્ષણે હું જ્ઞાયક છું એમ સહજપણે જ્ઞાતાના અસ્તિત્વ તરફની પરિણતિ રહ્યા જ કરે છે. શ્રુતના ચિંતવનના કાળે, કે શાસ્ત્ર-અભ્યાસ વખતે જ્ઞાતાધારા જુદી ને જુદી રહે છે. જેને એકત્વબુદ્ધિ છે, જિજ્ઞાસુની ભૂમિકા છે તેને જ્ઞાતાપણું હોતું નથી. તેને માત્ર ભાવના રહે છે કે હું જ્ઞાયક છું, પણ પરિણતિ પ્રગટ કરવાની બાકી છે.

જેને જ્ઞાયકની દશા પ્રગટ થઈ છે; સ્વાનુભૂતિની દશા પ્રગટી છે તે સવિકલ્પમાં આવે ત્યારે પણ તેને ભેદજ્ઞાનની ધારા રહે છે. દર્શન કરે, પૂજા કરે, ગમે તે કરે તોપણ તેને ભેદજ્ઞાનની ધારા ચાલુ જ રહે છે.

જ્ઞાનીને બહારથી ભગવાનની ભક્તિ ઘણી દેખાય, શ્રુતનું ચિંતવન ઘણું દેખાય તો પણ ક્યાંય એકત્વબુદ્ધિ થતી નથી. જ્ઞાયકની ધારા જુદી ને જુદી વર્તે છે. કર્મમાં અમુક જાતનો રસ ઘણો પડે છે, પણ તેને ભેદજ્ઞાનની ધારા વર્તે છે તેથી સ્થિતિ લાંબી પડતી નથી.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૩૪)



પ્રશ્ન :- જેટલું આ જ્ઞાન છે તેટલો આ આત્મા છે તે વિશેષ સમજાવવા કૃપા કરશો.

સમાધાન :- ગુણ અને ગુણી અભેદ છે. જે આ જ્ઞાનલક્ષણ દેખાય છે તેટલો આત્મા છે. જ્ઞાન સિવાયનું બધું વિભાવ અને પર છે. જે આ જ્ઞાનલક્ષણ દેખાય છે તે જ્ઞાનલક્ષણથી તું આત્માને ઓળખી લે. જે જ્ઞાનલક્ષણ દેખાય છે તેટલો આત્મા છે. લક્ષ્ય-લક્ષણ એક જ છે-અભેદ છે. તેને ગ્રહણ કર. તું જ્ઞાયકને ગ્રહણ કરી લે.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૩૫)



પ્રશ્ન :- આ સિદ્ધાન્તથી આચાર્યદેવને જ્ઞાયક ગ્રહણ કરાવવાનો હેતુ છે ?

સમાધાન :- હા, જ્ઞાયકને ગ્રહણ કરાવવો છે. જેટલું આ જ્ઞાન છે તેટલો આ આત્મા છે. બાકી જે દેખાય છે તે બધો વિભાવ છે. એક જ્ઞાનલક્ષણ આત્માને તું ઓળખી લે, એક જ્ઞાયકને ઓળખી લે. તેના ઉપર દષ્ટિ

કર. ગુણ-ગુણી અભેદ છે તેના ઉપર દષ્ટિ સ્થાપી દે, તેમાં સંતોષ કર, તેમાં રુચિ કર, તેનાથી તૃપ્ત થા. તેમાં જ સર્વસ્વ છે, બહાર કંઈ નથી. તેના ઉપર દષ્ટિ સ્થાપીને તેનું જ્ઞાન કર, તેની પરિણતિ કર, તેમાંથી સંતોષ મળશે, તેમાંથી તૃપ્તિ આવશે ને તેમાંથી જ અપૂર્વ સુખ પ્રગટ થશે. ભગવાન-સ્વરૂપ આત્મામાં જ બધું ભરેલું છે. -જ્ઞાયકમાં જ બધું ભર્યું પડ્યું છે.

કોઈને એમ થાય કે એકલા જ્ઞાનમાં શું છે ? જ્ઞાનમાંથી શું મળવાનું છે ? પણ તે જ્ઞાનમાં અનંત-અનંત ભરેલું છે. જેટલું આ જ્ઞાન છે તેટલો આત્મા છે તેને તું ગ્રહણ કર. (સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૩૬)



પ્રશ્ન :- વ્યવહારના ઘણા ભેદ પડે પણ મુખ્યતા તો અભેદની છે ને ?

સમાધાન :- ભેદ ઉપરથી દષ્ટિ ઉઠાવીને એક અભેદને ગ્રહણ કરવાનો છે. એક અભેદને ગ્રહણ કરતાં ભેદનું જ્ઞાન વચ્ચે આવી જાય છે, પણ ભેદ ઉપર તેને દષ્ટિ રાખવાની નથી. બીજું બધું જ્ઞાન કર અને દષ્ટિ અભેદ ઉપર કર. દષ્ટિ તેમાં સ્થાપ્યા પછી તેમાંથી શુદ્ધ પર્યાયો સ્વયં પ્રગટ થશે. પહેલાં તુ યથાર્થ નિશ્ચય કર કે જ્ઞાનસ્વરૂપ આત્મા તે જ હું છું. યથાર્થ દષ્ટિ પ્રગટ કર, દષ્ટિ જ મુખ્ય છે. દષ્ટિ એક અભેદ આત્મા ઉપર કર.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૩૭)



પ્રશ્ન :- પ્રથમ જ્ઞાનથી આત્માના સ્વરૂપનો ભેદપૂર્વક વિચાર કરે કે હું આવા જ્ઞાનસામર્થ્યથી ભરેલો છું ?

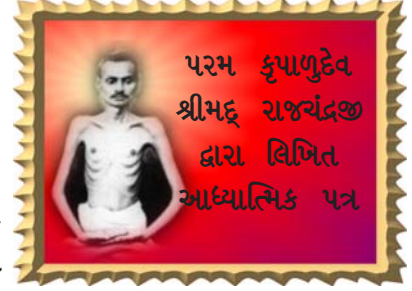
સમાધાન :- પહેલાં વિકલ્પ દ્વારા નક્કી કરે છે. વિચારમાં એવા ભેદના વિચારો વચ્ચે આવ્યા વગર રહેતા નથી, પણ દષ્ટિ એક અભેદની કરવાની છે. દષ્ટિ અભેદ ઉપર ગઈ ને તેમાં લીન થતાં વિકલ્પ તૂટીને તેમાંથી સ્વાનુભૂતિ પ્રગટ થાય છે. પહેલાં નિશ્ચય કરે, વ્યવહાર વચ્ચે આવશે પછી તે મતિ-શ્રુતની બુદ્ધિને સમેટીને નિર્વિકલ્પ થાય છે.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૩૮)



મુંબઈ, શ્રાવણ સુદ, ૧૯૪૭

ઉપાધિના ઉદયને લીધે પહોંચ આપવાનું બની શક્યું નથી, તે ક્ષમા કરશો. અત્ર અમને ઉપાધિના ઉદયને લીધે સ્થિતિ છે. એટલે તમને સમાગમ રહેવો દુર્લભ છે.



આ જગતને વિષે સત્સંગની પ્રાપ્તિ ચતુર્થકાળ જેવા કાળને વિષે પણ પ્રાપ્ત થવી ઘણી દુર્લભ છે, તો આ દુષ્કાળને વિષે પ્રાપ્તિ પરમ દુર્લભ હોવી સંભાવ્ય છે એમ જાણી, જે જે પ્રકારે સત્સંગના વિયોગમાં પણ આત્મામાં ગુણોત્પત્તિ

થાય તે તે પ્રકારે પ્રવર્તવાનો પુરુષાર્થ વારંવાર, વખતોવખત અને પ્રસંગે પ્રસંગે કર્તવ્ય છે; અને નિરંતર સત્સંગની ઈચ્છા, અસત્સંગમાં ઉદાસીનતા રહેવામાં મુખ્ય કારણ તેવો પુરુષાર્થ છે, એમ જાણી જે કંઈ નિવૃત્તિનાં કારણો હોય, તે તે કારણોનો વારંવાર વિચાર કરવો યોગ્ય છે.

અમને આ લખતાં એમ સ્મરણ થાય છે કે 'શું કરવું ?' અથવા 'કોઈ પ્રકારે થતું નથી ?' એવું તમારા ચિત્તમાં વારંવાર થઈ આવતું હશે, તથાપિ એમ ઘટે છે કે જે પુરુષ બીજા બધા પ્રકારનો વિચાર અકર્તવ્યરૂપ જાણી આત્મકલ્યાણને વિષે ઉજમાળ થાય છે, તેને કંઈ નહીં જાણતાં છતાં, તે જ વિચારના પરિણામમાં જે કરવું ઘટે છે, અને કોઈ પ્રકારે થતું નથી એમ ભાસ્યમાન થયેલું તે પ્રગટ થવાનું તે જીવને વિષે કારણ ઉત્પન્ન થાય છે, અથવા કૃતકૃત્યતાનું સાક્ષાત્ સ્વરૂપ ઉત્પન્ન થાય છે.

દોષ કરે છે એવી સ્થિતિમાં આ જગતના જીવોના ત્રણ પ્રકાર જ્ઞાનીપુરુષે દીઠા છે. (૧) કોઈ પણ પ્રકારે જીવ દોષ કે કલ્યાણનો વિચાર નથી કરી શક્યો, અથવા કરવાની જે સ્થિતિ તેમાં બેભાન છે, એવા જીવોનો એક પ્રકાર છે. (૨) અજ્ઞાનપણથી, અસત્સંગના અભ્યાસે ભાસ્યમાન થયેલા બોધથી દોષ કરે છે તે ક્રિયાને કલ્યાણસ્વરૂપ માનતા એવા જીવોનો બીજો પ્રકાર છે. (૩) ઉદયાધીનપણે માત્ર જેની સ્થિતિ છે, સર્વ પરસ્વરૂપનો સાક્ષી છે એવો બોધસ્વરૂપ જીવ, માત્ર ઉદાસીનપણે કર્તા દેખાય છે; એવા જીવોનો ત્રીજો પ્રકાર છે.

એમ ત્રણ પ્રકારના જીવસમૂહ જ્ઞાનીપુરુષે દીઠા છે. ઘણું કરી પ્રથમ પ્રકારને વિષે સ્ત્રી, પુત્ર, મિત્ર, ધનાદિ પ્રાપ્તિ-અપ્રાપ્તિના પ્રકારને વિષે તદાકાર-પરિણામી જેવા ભાસતા એવા જીવો સમાવેશ પામે છે. જુદા જુદા ધર્મની નામક્રિયા કરતા એવા જીવો, અથવા સ્વચ્છંદ-પરિણામી એવા પરમાર્થમાર્ગે ચાલીએ છીએ એવી બુદ્ધિએ ગૃહીત જીવો તે બીજા પ્રકારને વિષે સમાવેશ પામે છે, સ્ત્રી, પુત્ર, મિત્ર, ધનાદિ પ્રાપ્તિ-અપ્રાપ્તિ એ આદિ ભાવને વિષે જેને વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો છે, અથવા થયા કરે છે; સ્વચ્છંદ-પરિણામ જેનું ગણિત થયું છે, અને તેવા ભાવના વિચારમાં નિરંતર જેનું રહેવું છે, એવા જીવના દોષ તે ત્રીજા પ્રકારમાં સમાવેશ થાય છે. જે પ્રકારે ત્રીજો સમૂહ સાધ્ય થાય તે પ્રકાર વિચાર છે. વિચારવાન છે તેને યથાબુદ્ધિએ, સદ્ગ્રંથે, સત્સંગ તે વિચાર પ્રાપ્ત થાય છે, અને અનુક્રમે દોષરહિત એવું સ્વરૂપ તેને વિષે ઉત્પન્ન હોય છે. આ વાત ફરી ફરી સૂતાં તથા જાગતાં અને બીજે બીજે પ્રકારે વિચારવા, સંભારવા યોગ્ય છે.

મુમુક્ષુજીવના આદર્શ એવા ધન્યાવતાર પ્રશમમૂર્તિ
પૂજ્ય બહેનશ્રી ચંપાબહેનના ૯૯મી મંગલકારી જન્મોત્સવ પ્રસંગે
અત્યંત વિનમ્રભાવે દાસત્વભાવે કોટિ કોટિ વંદન !



ગુરુદેવની પ્રવચન-સભામાં પૂજ્ય બહેનશ્રી બિરાજમાન હતા તો એ ભાવો, જે સૂક્ષ્મમાં સૂક્ષ્મ ન્યાયો નીકળ્યા છે, અધ્યાત્મના ઊંચા ભાવો નીકળ્યા છે, એ કોઈ નહોતા સમજતા એની સામે જોઈને નથી નીકળ્યા. જે સમજ્યા છે, જે ગ્રહણ કરી શકે છે, જે પકડી શકે છે એને કારણે નીકળે છે. તીર્થંકરની સભામાં ગણધરની હાજરીથી એ વાત નીકળે છે. એ પ્રકાર હતો તો એનો લાભ બીજાને મળે છે એ એમનો ઉપકાર ગણાય છે. ગણધરનો ઉપકાર ગણાય છે કે તમે હતા તો અમને લાભ મળ્યો, નહીંતર તો વાણી જ ન છૂટી હોત. (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીની) અત્યારે જે વાણી ઉપલબ્ધ છે એનું કારણ એ છે. એમનો ઉપકાર છે. (એ) ઝીલનાર હતા તો અંદરથી ભાવ નીકળતા હતા.

- પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈ